वर्ष: 16 | अंक : 3 | मार्च 2025 | मूल्य: ₹ 10 /=

हंसलोक संदेश

भारतीय संस्कृति, धर्म व सामाजिक एकता की प्रतीक हिंदी मासिक पत्रिका

हंसलोक संदेश

भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक ज्ञान व सामाजिक एकता की प्रतीक

वर्ष-16, अंक-3
मार्च, 2025
फाल्गुन-चैत्र, 2082 वि.स.
प्रकाशन की तारीख
प्रत्येक माह की 5 व 6 तारीख

मुद्रक एवं प्रकाशक-
श्री हंसलोक जनकल्याण समिति (रजि.)
श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, (खसरा नं. 947),
छतरपुर-भाटी माइंस रोड, भाटी, महरौली,
नई दिल्ली-110074 के लिए मंगल द्वारा
एमिनेंट ऑफसेट, डी-94, ओखला इण्डस्ट्रियल
एरिया, फेस-।, नई दिल्ली-110020
से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया।

सम्पादक- राकेश सिंह
मूल्य-एक प्रति-रु.10/-
पत्राचार व पत्रिका मंगाने का पता:
कार्यालय: हंसलोक संदेश
श्री हंसलोक जनकल्याण समिति,
B-18, भाटी माइंस रोड, भाटी,
छतरपुर, नई दिल्ली-110074
संपर्क सूत्र-011-26652101/102
मो. नं. : 8800291788, 8800291288
Email: hansloksandesh@gmail.com
Website: www.hanslok.org
Subject to Delhi Jurisdiction
RNI No. DEL.HIN/2010/32010

संपादकीय

होली है भक्ति का उत्सव

प्राचीन काल से हमारे देश में होली से जुड़ी हिरण्यकशिपु और होलिका की एक कहानी प्रचलित है। 'कश्यप' शब्द का अर्थ है, देखने वाला। हिरण्यकश्यपु वह है जो सदा स्वर्ण को देखता रहता है। उसे रिश्ते-नाते नजर नहीं आते सिर्फ धन-संपत्ति नजर आती है। हिरण्यकशिपु की बहन होलिका के पास एक ऐसा वस्त्र था, जिसे पहनकर अगर वह अग्नि पर बैठ जाए, तो अग्नि उसको जला नहीं सकती थी। हिरण्यकशिपु का पुत्र था प्रह्लाद। एक अति विशिष्ट संतोष, खुशी और आल्हाद ही प्रह्लाद है। प्रह्लाद नारायण भक्त था। नारायण माने आत्मा। जो खुशी आत्मा से मिलती है, वह खुशी और कहीं नहीं मिलती। हम सभी को एक ऐसे विशिष्ट आनंद की चाह है, जो कभी खत्म ही न हो। हिरण्यकशिपु को प्रह्लाद की नारायण भक्ति पसंद नहीं थी। वह चाहता था कि प्रह्लाद नारायण की नहीं, उसकी भक्ति करे। इस वजह से हिरण्यकशिपु स्वयं भी परेशान रहा और उसने तरह-तरह से प्रह्लाद को भी परेशान किया, मगर प्रह्लाद को कुछ नहीं हुआ। लोभी व्यक्ति दूसरों के साथ स्वयं को और ज्यादा सताते हैं। ऐसे लोगों के चेहरे पर कोई आनंद, मस्ती और शांति कभी हो ही नहीं सकती। हिरण्यकशिपु ने अपनी बहन होलिका से कहा कि वह प्रह्लाद को गोद में लेकर अग्नि पर बैठ जाए। उसने ऐसा सोचा कि होलिका को वरदान की वजह से कुछ नहीं होगा और प्रह्लाद की अग्नि में जलकर मृत्यु हो जाएगी। होलिका प्रह्लाद को लेकर अग्नि में बैठ गयी, लेकिन प्रह्लाद नहीं जला बल्कि होलिका जल गई। प्राचीन काल से भारत में यह रिवाज है कि फाल्गुन पूर्णिमा के दिन घर की पुरानी और बेकार की वस्तुओं को इकट्ठा करके उसकी होली जलाते हैं। इसी तरह यदि हम पुरानी सब बातों और कामनाओं को नहीं जलाते, तो कामनाएं हमको जला देती हैं। कामनाओं को जलाने का अर्थ है, तृप्त हो जाना, पूर्ण हो जाना, स्वयं को प्रभु के समर्पण कर देना। हमारे भीतर के आनंद और खुशी को बचाने की तृष्णा इस पूरी समष्टि को है। यह सृष्टि हर तरह से हमें खुश करने के प्रयास में लगी हुई है। हम फिर भी मुँह लटका कर हिरण्यकशिपु बने रहते हैं।

जो प्रह्लाद की भांति भोले भाव से भरा है और जिसमें प्रभु भक्ति की मस्ती है, उसे भगवान के सिवा कुछ नजर नहीं आता। ऐसे ही भक्त की प्रार्थना सुनकर भगवान नारायण प्रकट होकर हिरण्यकशिपु रूपी शत्रु का विनाश करते हैं। जो पूर्णत: प्रभु आश्रित है, उसका कोई बाल बांका नहीं कर सकता। इसीलिए कहा गया है- **बाल न बांका कर सके, जो जग बैरी होय।** यह जड़ता में से चेतना का उदय ही होली है। जब जीवन में आत्म-चेतना का उदय हो जाता है तो फिर सम्पूर्ण जीवन प्रभु भक्ति के रंग से सराबोर हो जाता है। ऐसे भक्तों के जीवन में ही होलीरूपी भक्ति का उत्सव अवतरित होता है। ऐसे भक्ति से परिपूर्ण भक्तों की होली ही वास्तविक होली होती है, क्योंकि होली है ही भक्ति का उत्सव है। ■

वासंती नवरात्रा है सनातन संस्कृति के नववर्ष और प्रकृति के नवश्रृंगार का महोत्सव

वासंती नवरात्रा सनातन संस्कृति का ऐसा पर्व है, जो न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि यह प्रकृति के साथ मानव जीवन के गहरे संबंध को भी उजागर करता है। यह त्योहार सृष्टि के नव परिधान में सजने-संवरने और पूरे परिवेश में मादकता का मनुहार घोल देने को आतुर नैसर्गिक ऋतु परिवर्तन को समर्पित सृष्टि रचयिता का स्वाभाविक उद्गार है। सृष्टि के नवजीवन, नवश्रृंगार और ऋतु परिवर्तन की उस जादुई अवस्था का उत्सव है, जब प्रकृति अपने सबसे सुंदर और जीवंत रूप में प्रकट होती है। वसंत ऋतु, जो जीवन के पुनर्जन्म और नवसृजन का संदेश लेकर आती है, इस पर्व का आधार है। जब प्रकृति स्वयं नव परिधान में सजती है, पेड़-पौधों पर नवांकुर फूटते हैं, और वातावरण फूलों की सुगंध से भर जाता है, तब वासंती नवरात्रा का आगमन होता है।

यह नवरात्रा, देवी दुर्गा की उपासना का विशेष अवसर है। नवशक्ति और नवचेतना का यह पर्व केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन के भीतर आत्मशक्ति और आत्मसंयम को जागृत करने का सुयोग भी है। वासंती नवरात्रा का महत्व केवल देवी के नौ रूपों की पूजा तक ही सीमित नहीं है। बल्कि यह पर्व हमें यह संदेश भी देता है कि जीवन की हर कठिनाई के सामने आत्मबल और धैर्य का सहारा लेना ही सच्ची भक्ति है। देवी दुर्गा के नौ रूप, जिनमें शक्ति, करुणा, ज्ञान और साहस का समावेश है, हमें जीवन के हर पहलू में संतुलन बनाए रखने की प्रेरणा देते हैं।

वासंती नवरात्रा पर विशेष

वासंती नवरात्रा का यह पर्व सनातन संस्कृति के नववर्ष के आरंभ का भी संदेश देता है। यह काल भारतीय पंचांग के अनुसार चैत्र मास की प्रतिपदा से आरंभ होता है, जिसे नवसंवत्सर या हिंदू नववर्ष के रूप में मनाया जाता है। यह समय केवल कैलेंडर में बदलाव का नहीं, बल्कि आत्म-विश्लेषण और नए संकल्पों का भी सुअवसर है। यह हमें जीवन में नई ऊर्जा, नए विचार और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

वासंती नवरात्रा का यह संदेश है कि जैसे प्रकृति हर वर्ष खुद को नवीनीकृत करती है, वैसे ही हमें भी अपने भीतर की नकारात्मकता को समाप्त कर, नई संभावनाओं को आत्मसात करना चाहिए। इस पर्व का एक विशेष पहलू है- प्रकृति के साथ सामंजस्य। वासंती नवरात्रा केवल धार्मिक अनुष्ठानों का समय नहीं, बल्कि यह हमें यह भी सिखाता है कि हमें प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर जीवन जीना चाहिए। वसंत ऋतु में जब पेड़-पौधे, पक्षी और समस्त जीव-जंतु अपने जीवन को पुन: आरंभ करते हैं, तब यह पर्व हमें भी आत्मशुद्धि के लिए साधना कर अपनी आत्मा में नव-ऊर्जा का संचार करने का आह्वान करता है। किसान अपनी फसलों की कटाई और नई फसल की तैयारी करते हैं और यह पर्व उनके जीवन में समृद्धि और खुशी का प्रतीक बनता है।

वासंती नवरात्रा का महत्व केवल धार्मिक और प्राकृतिक संदर्भों तक सीमित नहीं है। यह सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस पर्व के माध्यम से परिवार और समाज के लोग एकजुट होते हैं, सामूहिक पूजा और भजन-कीर्तन का आयोजन करते हैं और आपसी प्रेम और सौहार्द को प्रोत्साहित करते हैं। यह समय परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहर को अगली पीढ़ी तक पहुंचाने का भी होता है। यह पर्व हमें यह सिखाता है कि जीवन में नैतिकता, सत्य, और कर्तव्य का पालन करना ही सच्ची भक्ति है। वर्तमान समय में, जब हमारी जीवनशैली तेज और तनावपूर्ण हो गई है, वासंती नवरात्रा का महत्व और भी बढ़ जाता है। यह पर्व हमें रुककर आत्ममंथन करने और अपनी आंतरिक शक्ति को पहचानने का अवसर देता है। यह समय केवल पूजा-अर्चना का नहीं, बल्कि ध्यान, योग-साधना और स्वाध्याय का भी है। यह पर्व हमें यह सिखाता है कि वास्तविक शांति और संतोष हमारे भीतर ही विद्यमान है; इसे बाहर खोजने की आवश्यकता नहीं है।

वासंती नवरात्रा का यह संदेश है कि जैसे प्रकृति हर वर्ष नवजीवन का सृजन करती है, वैसे ही हमें भी अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास करना चाहिए। यह पर्व हमें यह प्रेरणा देता है कि हम अपने विचारों और कार्यों को उच्चतम स्तर पर ले जाएं और समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन का स्रोत बनें। वास्तव में वासंती नवरात्रा केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि यह नवजीवन, नवचेतना और नवसृजन का उत्सव है। यह पर्व हमें प्रकृति, समाज और आत्मा के साथ जुड़ने का अवसर प्रदान करता है। इस नवरात्रा पर आएं, हम सब अपने भीतर की नकारात्मकता को समाप्त करें, देवी दुर्गा की शक्ति को आत्मसात करें और प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर एक नए और उज्जवल भविष्य की ओर बढ़ें। आइए, हम सब प्रकृति के नवश्रृंगार की इस बेला में नवचेतना के दीप जलाएं। यही वासंती नवरात्रा का सार है।

वासंती नवरात्रा दुर्गा के नव रूपों में प्रगट होने का भी उत्सव है। जब-जब देवों ने माँ दुर्गा को पुकारा वे समय-समय पर विभिन्न रूपों में प्रगट हुई और देवों के कष्टों का शमन किया। नवरात्रा में माँ दुर्गा के इन्हीं प्रमुख नव रूपों की क्रमश: पूजा-आराधना की जाती है। माँ दुर्गा के ये नव रूप निम्नानुसार है-

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ।।
पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम् ।।
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गा: प्रकीर्तिता:।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ।।

अर्थात् शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री। इसके अलावा माता दुर्गा के कुछ और नाम भी है; जैसे- महिषासुरमर्दिनी, शाकम्बरी, गौरी, नारायणी आदि नवरात्रा के पावन अवसर पर हमें माँ दुर्गा के विभिन्न रूपों की पूजा-आराधना के साथ नव द्वारों वाले शरीर में स्थित आत्मा रूपी दुर्गा की भी आराधना करने की जरूरत है, जब आत्मा रूपी दुर्गा प्रकाशित होगी, तभी हमारे भीतर की समस्त इच्छाओं और वासनाओं का शमन होगा, तभी सही मायने में नवरात्रा मनाने का उद्देश्य पूर्ण होगा। ■

करके दया दयाल ने, मानुष जन्म दिया

परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! हमारे धर्मशास्त्र सद्गुरु की महिमा से भरे पड़े हैं। संतों ने सद्गुरु के बारे में लिखा है-

गुरु के सुमिरण मात्र से,
नाशत विघ्न अनन्त।
ताते सर्वारम्भ में,
ध्यावत हैं सब संत।।

गुरु महाराज के सुमिरण मात्र से अनंत विघ्नों का नाश होता है, इसलिए सभी संत सबसे पहले गुरु महाराज के चरणों का ध्यान करते हैं। देखो, भगवान श्री राम की महिमा रामचरित मानस में है, भगवान श्रीकृष्ण की महिमा श्रीमद्भागवत में है, लेकिन सद्गुरु की महिमा सभी सद्ग्रन्थों में है। रामचरित मानस में लिखा है-

बन्दउँ गुरु पद कंज कृपा,
सिंधु नर रूप हरि।
महा मोह तम पुंज,
जासु वचन रवि करनिकर।।

संसार में तो बहुत उजाला है, मगर गुरु के बिना जीवन में घोर अंधकार रहता है। जो भक्त गुरु महाराज द्वारा दिये गये भगवान के नाम का सुमिरण करते हैं, उनके अनन्त विघ्नों का नाश होता है, लेकिन हम करते क्या हैं? पहले तो हम किसी का सुमिरण नहीं करते और करते भी हैं, तो सब कल्पित। निराकार को मानते हैं, साकार भगवान श्री राम एवं श्री कृष्ण आदि का सुमिरण करते हैं, लेकिन मैं कहता हूँ कि जब भगवान राम को राजगद्दी हुई, तो उस समय के राजा-महाराजा, ऋषि-महर्षि सब लोग आये थे, पंडित लोग भी आये थे। उस समय भगवान श्री राम हाथ जोड़कर

कहते हैं कि भाई, जो कुछ मैं कहता हूँ, उसे तुम ध्यान से सुन लो। तुम्हारी समझ में नहीं आये तो मुझे टोक देना, मेरे से पूछ लेना। मैं इसलिए नहीं कुछ कह रहा हूँ कि मैं अवतार हूँ या मैं राजा हूँ और तुम प्रजा हो। हमारा तुम्हारा तो एक ही नाता है, हम भी मनुष्य हैं और तुम भी मनुष्य हो। तो क्या कहते हैं भगवान राम? रामचरित मानस तो तुम लोगों ने पढ़ी है, लेकिन कभी उसे समझने का भी प्रयास किया? कहते हैं-

बड़े भाग मानुष तन पावा।
सुर दुर्लभ सद्ग्रन्थन्हि गावा।।
साधन धाम मोच्छ कर द्वारा।
पाइ न जेहिं परलोक सँवारा।।

बड़े भाग का क्या अर्थ समझते हो? मनुष्य तन किसी दुकान में नहीं मिलता है, किसी देश में नहीं मिलता है कि वहां से पार्सल करके आपके पास पहुँच जावे। यह ईश्वर का प्रसाद है और ईश्वर की कृपा से मिलता है। बहुत सारे पढ़े-लिखे लोग कहते हैं कि मनुष्य शरीर हमारे कर्मों से मिलता है, लेकिन जिसने इस दुनियां को बनाया, यदि वह मनुष्य का ढांचा ही न बनाता, तो मनुष्य का तन कैसे मिलता? हम लख चौरासी को मानते हैं। कोई गधा, कुत्ता या भैंस का शरीर छोड़कर आया, तो कुत्ते या भैंस की योनि में तो उसने मनुष्य शरीर को नहीं बनाया। तो ईश्वर की कृपा पहली कृपा है, जो हमें मनुष्य का तन मिल गया। दूसरी कृपा धार्मिक ग्रन्थों की है। चाहे सब शास्त्र घोलकर पी लो, चाहे कंठस्थ कर लो, परन्तु तत्व की बात क्या है, सारे ग्रन्थों का एसेंस (सार तत्व) क्या है। कोई धार्मिक ग्रन्थ या शास्त्र ऐसा नहीं है, जिसमें लिखा हो कि गुरु के बिना ज्ञान हो जायेगा। रामचरित मानस में लिखा है-

गुरु बिन भवनिधि तरै न कोई।
जौ विरंचि संकर सम होई।।

तुम ऐसे सिद्ध हो सकते हो कि सृष्टि भी बना लो, सृष्टि का पालन भी कर लो और उस सृष्टि को नेस्तनाबूद भी कर

दो। भगवान शंकर की तरह यह शक्ति भी प्राप्त कर सकते हो। इस तरह की ये तीनों ताकतें तुम्हें प्राप्त हो जाएं, भगवान शंकर की तरह तुम संहार की शक्ति भी प्राप्त कर लो, लेकिन यदि तुम सोचते हो कि ऐसा करने से भवसागर से पार हो जाओगे, तो यह नामुमकिन है। फिर लिखा है-

बिन गुरु होय कि ज्ञान,
ज्ञान कि होइ बिराग बिनु।
गावहिं बेद पुरान सुख कि,
लहिअ हरि भगति बिनु।।

मैं और ग्रन्थों का हवाला न देकर रामचरित मानस के द्वारा समझा रहा हूं, क्योंकि रामचरित मानस सब लोग समझ सकते हैं, यह सरल भाषा का ग्रन्थ है। पहली कृपा तो जीव पर ईश्वर की हुई कि मनुष्य देह मिल गई। उसमें काले-गोरे स्त्री-पुरुष आदि का कोई सवाल नहीं है। मनुष्य देह जिसको मिल गई, उसके ऊपर ईश्वर की पहली कृपा हो गई।

करके दया दयाल ने,
मानुष जनम दिया।
बन्दा न करे भजन तो,
भगवान क्या करे।।

भगवान ने दया करके मनुष्य शरीर दिया, इसके बाद भी यदि मनुष्य भजन ना करे, तो इसमें भगवान क्या कर सकता है। दूसरी कृपा वेद शास्त्रों की है। वेद शास्त्रों को पढ़ने से हमारे अंदर ज्ञान को जानने की जिज्ञासा पैदा होती है।

मनुष्य पर तीसरी कृपा होती है- गुरु महाराज की। 'गु' नाम अन्धेरा और 'रु' नाम प्रकाश अर्थात् जो अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाये, वही है सद्गुरु। गुरु क्या बतलाते हैं? वे हमारे अंदर से अज्ञान का अंधेरा मिटाकर ज्ञान का उजाला करते हैं।

गुरु महाराज का वह कौन-सा वचन है, जो सूरज की करनी करता है? सूरज तो रात के अंधेरे का नाश करता है और गुरु का वचन महामोह रूपी तम, अज्ञानरूपी जो अंधेरा है, उसका नाश करता है। कौन-सा वचन है वह? तुम लोग गुरु बनाते हो। कोई गुरु मंत्र बताता है, कोई माला बताता है, कोई तुमको आसन बता देता है, तुमने उसको गुरु मान लिया। तुम कहोगे कि हम तो लगे हैं फलां गुरु के पीछे, लेकिन ग्रन्थ क्या कहते हैं? तब भगवान फिर कहते हैं कि यह साधन का धाम यानि भजन करने की जगह है। जिसने भी साधन किया है, इसी मनुष्य तन में किया है। बड़े-बड़े ऋषि, महर्षि, अवतार आदि जो भी हुए, इसी मनुष्य शरीर में हुए। ध्रुव, प्रह्लाद, मीराबाई और भिलनी जैसे भक्त सब इसी मनुष्य तन में आये। सब कुछ इसी में हो सकता है। गुरु नानक साहब कहते हैं-

> संसार में तो बहुत उजाला है, मगर गुरु के बिना जीवन में घोर अंधकार रहता है। जो भक्त गुरु महाराज द्वारा दिये गये भगवान के नाम का सुमिरण करते हैं, उनके अनन्त विघ्नों का नाश होता है।

लख चौरासी भ्रमदिया,
मानुष जनम पायो।
कह नानक नाम संभाल,
सो दिन नेड़े आयो।।

लख चौरासी भ्रमते-भ्रमते भगवान ने तुमको चौरासी से छुड़ाकर मनुष्य का शरीर दिया है। अब तुम समझो या न समझो। ऐसा मनुष्य तन पाकर भी जिसने परलोक के लिए कुछ कमाई नहीं की, भगवान के नाम का सुमिरन नहीं किया, तो उसका जीवन व्यर्थ चला जायेगा। कहा है कि ऐसा मनुष्य काल को, कर्म को और ईश्वर को झूठा दोष लगाता है। काल क्या है? काल का मतलब चार युग होते हैं- सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग। सतयुग में चार हिस्सा पुण्य का और बीज मात्र यानि बहुत थोड़ा-सा हिस्सा पाप का रहता है। त्रेता में तीन हिस्सा हो गया पुण्य और एक हिस्सा रह गया पाप। द्वापर में तीन हिस्सा पाप और एक हिस्सा पुण्य रहता है। कलियुग में बीज मात्र सत्य का और चार हिस्सा हो गया पाप। कलियुग में कर्म करने का, भजन करने का मौका मिला है। कर्म के बिना तो कुछ भी प्राप्त नहीं होता। कर्म योनि तो अब मिली है तुमको। अब भगवान के सच्चे नाम को जानकर उसका सुमिरण करो। क्यों कहा भगवान राम ने कि बड़े भाग मानुष तन पावा? क्योंकि मनुष्य तन में तुम हलुवा-पूरी बना भी सकते हो और खा भी सकते हो, दूसरी योनियों में हलुआ-पूरी खा तो सकते हो, लेकिन बना नहीं सकते। देवता से लेकर जितने भी जलचर, थलचर या नभचर जीव-जन्तु हैं, ये बना बनाया हलुवा-पूरी खा तो सकते हैं, लेकिन बना नहीं सकते। तुम किसी मन्दिर में सूजी, घी, चीनी, कड़ाही और चूल्हा ले जाओ, चूल्हा जला दो और कड़ाही भी चढ़ा दो और कहो किसी देवता से कि हलुवा बना दे या खीर बना दे, तो नहीं बना सकता। आदमी से कहो तो वह बना देगा। खाना सब योनियों में खा सकते हैं, लेकिन खाना केवल मनुष्य योनि में ही बनाया जा सकता है। हमको भगवान ने उड़ने के लिए पर नहीं दिये, लेकिन दिमाग से

हवाई जहाज बनाकर उड़ते हैं। हमें दो पांव दिये, एक घंटे में ज्यादा से ज्यादा तीन मील चल सकते हैं। लेकिन दिमाग से रेल और कार बनाकर सौ-सौ मील तक एक घंटे में चलते हैं। रात को देवी-देवता या पशु-पक्षी किसी ने भी लाइट का इन्तजाम नहीं किया। आदमी ने रोशनी का इन्तजाम कर लिया, बत्ती बनायी, लालटेन बनायी, बिजली का उजाला बना लिया। तो ऐसा मनुष्य तन पाकर फिर उसे भोगों के पीछे गँवा रहे हो, यह तुम क्या कर रहे हो? रामचरित मानस में लिखा है-

हित अनहित पशु पक्षिहु जाना।
मानुष तन गुन ज्ञान निधाना।।

अपना भला और बुरा तो पशु-पक्षी भी जानते हैं। पशु को किसी गहरे गड्ढे की तरफ ले जाओ, तो नहीं जायेगा। चिड़िया को मारने के लिए पत्थर उठाने को झुको, तो चिड़िया उड़ जायेगी और मनुष्य होते हुए तुमको अपने हित-अनहित का पता ही नहीं। आज दुनियां में कितने बड़े-बड़े पंडित और विद्वान हैं। तोते की तरह भले ही उन्होंने ग्रन्थों को रट लिया होगा, पर वास्तविकता किसी को मालूम नहीं है। तुम जानते हो, यहाँ दिल्ली में बड़े-बड़े धर्म सम्मेलन होते हैं। यहां एक जैन महात्मा जी ने रामलीला मैदान में धर्म-सम्मेलन किया, उसमें हमको भी बुलाया। मैंने पूछा कि-

धर्म क्या है, यही कोई बतावे? देखो, सोचो- गुरू नानक साहब पैदा हुए, उसके बाद गुरु अंगद देव जी हुए, इस तरह करके कुल दस गुरु हुए। दसवें गुरु गोविन्दसिंह जी ने सिख धर्म चलाया। उन्होंने शिष्यों से पाँच निशान रखने को कहा- केश, कंघा, कच्छा, कड़ा और कृपाण। उनके शिष्य अपने पास ये पांचों निशान रखने लगे। सिख धर्म है, ठीक है, लेकिन मैं पूछता हूँ कि गुरु गोविन्दसिंह जी से पहले गुरु नानक साहब एवं पूर्वजों का कौन-सा धर्म था। मुहम्मद साहब के आने पर इस्लाम धर्म चालू हो गया, लेकिन मैं पूछता हूं कि जब मुहम्मद साहब पैदा ही नहीं हुए थे, उससे पहले कौन-सा धर्म था? तब इस्लाम धर्म कहां था? इसी तरह बौद्ध धर्म है। जब भगवान बुद्ध पैदा भी नहीं हुए थे, तो उनसे पहले कौन-सा धर्म था? इसी तरह से जैन धर्म को भी समझ लो। कहने का मतलब, जो धर्म है और सबका है, उसे कोई नहीं जानता। इसीलिए तो आपस में धर्म के नाम पर लड़ाइयां होती हैं, क्योंकि लोगों को धर्म का ज्ञान ही नहीं है।

> लख चौरासी भ्रमते-भ्रमते भगवान ने तुमको चौरासी से छुड़ाकर मनुष्य का शरीर दिया है। अब तुम समझो या न समझो। ऐसा मनुष्य तन पाकर भी जिसने परलोक के लिए कुछ कमाई नहीं की, भगवान के नाम का सुमिरन नहीं किया, तो उसका जीवन व्यर्थ चला जायेगा।

मैंने भगवान बुद्ध की तपस्थली बौद्ध गया का भ्रमण किया। वहां लिखा हुआ है कि भाई-भाई की तरह रहो, धर्म की रक्षा करो। पर पूछो उनसे कि धर्म चीज क्या है? पहले यह बताओ, तब तो रक्षा करोगे। यह धर्म जो तुम बता रहे हो, यह तो धर्म नहीं हैं। सिख धर्म अलग हो गया, बौद्ध धर्म अलग हो गया, जैन धर्म अलग हो गया और इस्लाम धर्म अलग हो गया। ये सब धर्म नहीं हैं। तुम बताओ इन धर्मों के चलाने वालों के पूर्वजों का क्या धर्म था? क्या वे अधर्मी थे, जिनके यहां ऐसी-ऐसी संतानें पैदा हुईं? धर्म के नाम पर पाकिस्तान और हिन्दुस्तान बन गया। कारण क्या था कि धर्म का मतलब ही नहीं समझे। हम समझाते हैं, तो कोई सुनता नहीं? हम तुम्हारे ही ग्रन्थों का अर्थ बताते हैं, लेकिन तब भी कोई सुनने के लिये तैयार नहीं है।

जिसको भी आज तक मोक्ष मिला या कोई सिद्धि मिली, तो इसी मनुष्य शरीर में मिली। गुरु नानक साहब हुए, बुद्ध भगवान हुए, ऋषि-महर्षि हुए, सब इसी मनुष्य शरीर में हुए किसी अन्य योनि में नहीं। यह शरीर साधन-धाम और मोक्ष का दरवाजा है। हमारे देश के प्राइम मिनिस्टर लाल बहादुर शास्त्री को आज सभी याद करते हैं। वे अपने समय के बहुत अच्छे और ईमानदार व्यक्ति थे। जब लालबहादुर शास्त्री जी ताशकन्द गए, तो उनका शरीर वहीं छूट गया। उनके साथ न स्त्री गई, न मकान गया, न धन गया, न साथी गए, कोई नहीं गया। जब पैदा हुए तो साथ में शरीर ही साथ था, लेकिन मरते समय वह शरीर भी साथ नहीं गया। उनकी तरह कितने ही प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, राजा-महाराजा और बादशाह संसार से चले गये, लेकिन वे अपने साथ कुछ भी नहीं ले जा सके। मरने के बाद वह शरीर मिट्टी हो जाता है, उसे चाहे कोई जला दें या मिट्टी में गाढ़ दें, कोई फर्क नहीं पड़ता।

इसलिए अभी हमें मौका मिला है, यह सुन्दर मनुष्य तन मिला है, इसे सार्थक बनाने का मौका मिला है। गुरु महाराज के बताये नाम का निरन्तर सुमिरण करें, यही इसकी सार्थकता है। जो इस मौके को चूक गया, वह बहुत पछतायेगा।

कलियुग में केवल भगवान के नाम का ही आधार है

श्री भोले जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! भगवान की शक्ति कहीं बाहर नहीं, बल्कि हमारे ही अंदर है। उसे जानने और समझने के लिए सत्संग सुनना होता है। संत-महापुरुष कहते हैं-

जिन ढूंढ़ा तिन पाइयां,
गहरे पानी पैठ।
मैं बावरी डूबन डरी,
रही किनारे बैठ।।

जो खोजता है, उसे भगवान का वह ज्ञान जरूर मिलता है। बाइबिल में क्राइस्ट कहते हैं कि दरवाजा खटखटाओगे तो तुम्हारे लिये खोल दिया जायेगा।

ज्ञान तो हमारे घट में है, पर अज्ञानता के कारण उसे हम बाहर ढूंढ़ रहे हैं। संतों ने कहा कि 'घूंघट के पट खोल री, तोहे पिया मिलेंगे।' कौन-से घूंघट के पट खोलने हैं, वह हम जानते नहीं हैं। कबीर साहब कहते हैं-

तंत्र-मंत्र सब झूठ है,
मत भरमो संसार।
सार शब्द जाने बिना,
कोई न उतरसी पार।।

वह सार शब्द क्या है, जब तक हम उसको नहीं जानेंगे, तब तक हम भगवान के नाम का सुमिरण नहीं कर सकते। जब हम मां के गर्भ में थे, तो भगवान से वादा किया था कि दया करके इस नरक कुण्ड से बाहर निकाल, बाहर आकर हम तेरा भजन करेंगे, लेकिन बाहर आकर हम भगवान को भूल गये।

भगवान श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं, हे अर्जुन! अंत समय में जो मेरा भजन-सुमिरण करता है, वह मुझे ही प्राप्त होता है, इसमें जरा भी संशय नहीं करना चाहिए। अंत समय में हम कैसे भजन-सुमिरण करेंगे? उसे कैसे प्राप्त करेंगे? यह ज्ञान हम जानते नहीं हैं। अंत समय

हम माला नहीं फेर सकते, क्योंकि उस वक्त हमारे हाथ अकड़ जायेंगे। मुंह से नाम नहीं बोल सकते, क्योंकि अंत समय हमारी जिभ्या अकड़ जायेगी। भगवान का वह क्या नाम है, जिसे हम उस समय भी जप सकें। गुरु नानकदेव जी कहते हैं-

ऊठत बैठत सोवत जागत नाम।
कह नानक सद् भये तिनके काम।।

हम उठते-बैठते, सोते-जागते हर वक्त उस प्रभु के नाम को जप सकते हैं। उसके लिए हमें ज्ञान को जानना बहुत जरूरी है।

एक राजा था। उसने एक लकड़हारे मित्र को एक बहुत कीमती चंदन का जंगल उपहार रूप में दिया। कुछ दिनों बाद राजा जब उसके पास पहुंचा, तो राजा की उसने खूब आवभगत की। राजा ने पूछा- मैंने तुमको बेशकीमती चंदन का जंगल दिया था, उसका तुमने क्या किया? उसने कहा- महाराज! उसको तो मैंने कोयला बनाकर बाजार में बेचा, पर गरीबी दूर नहीं हुई। राजा ने कहा तुम सीधे लकड़ी को बाजार में ले जा करके देखो। वह लकड़हारा बाजार में चन्दन की लकड़ी बेचने गया, तो वहां क्या देखता है कि कई लोग चंदन की लकड़ी के बहुत ज्यादा दाम देने को तैयार थे। फिर वह लौटकर आता है और राजा से माफी मांगता है। लकड़हारा कहता है- महाराज! मैं अपनी अज्ञानता पर बहुत शर्मिंदा हूं। राजा ने कहा तूने कितना बेशकीमती चंदन का जंगल ऐसे कोयला बनाकर फूंक दिया।

इसी प्रकार भगवान ने हमें स्वांसों रूपी चन्दन का बेशकीमती जंगल उपहार में दिया है, पर हमने उसे सांसारिक भोगों में लगाकर कोयला बनाकर खत्म कर दिया। तभी कहा कि जिसने इस संसार में आकर प्रभु के सच्चे नाम को संतों से नहीं जाना, उसका मनुष्य जीवन व्यर्थ ही चला गया। यह मनुष्य शरीर बड़े भाग्य से मिलता है। संत तुलसीदास जी कहते हैं-

कलयुग केवल नाम अधारा।
सुमिर सुमिर नर उतरहिं पारा।।

कलियुग में केवल भगवान के सच्चे नाम का ही आधार है। जिनको ज्ञान मिला है, जिन्होंने सच्चे नाम को जाना है, वे खूब भजन-सुमिरन करें और जो ज्ञान नहीं जानते हैं, वे जानने की कोशिश करें।

अध्यात्म ज्ञान का प्रचार करना-कराना सबसे बड़ी सेवा

माताश्री राजेश्वरी देवी

प्रेमी सज्जनों! आपके ग्वालियर शहर में हम लोग आये हैं। वैसे हम भी बहुत-सी जगह भ्रमण करके आ रहे हैं। मुंबई में इस समय पंखे चल रहे हैं, वहाँ गर्मी है। कहीं बर्फ पड़ रही है, कहीं बारिश पड़ रही है, तो कहीं ओले पड़ रहे हैं, कहीं शीत लहर चल रही है, कहीं ठंड से आदमी मर रहे हैं और आपके ग्वालियर में हमने सुना कि दो दिन पहले काफी बारिश थी, अब इस सत्संग के अवसर पर बारिश समाप्त हो गयी। यह आप लोगों के लिये बड़े सौभाग्य की बात है कि यहाँ सत्संग रखा गया है। यहाँ के लिए काफी दिन से भक्त लोग प्रार्थना कर रहे थे। आज आप लोगों का प्रेम हम लोगों को यहाँ खींच लाया।

सचमुच ही जब एक भक्त उस ज्ञान को जान लेता है, तो वह दूसरों को भी उस आनन्द को देना चाहता है। ज्ञानी की यह सबसे बड़ी खूबी है, सबसे बड़ा उसका यह उपकार है, सबसे बड़ी उसकी यह समाज-सेवा है कि वह दूसरों के लिए भी प्रयत्न करता है। भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से यही कहते हैं कि हे अर्जुन, तू कर्म करता जा और फल की इच्छा न कर। सचमुच ही इन सर्दियों के समय में हमारे जो भक्त लोग हैं, जिन्होंने उस ज्ञान को जान लिया है, वे जगह-जगह ऐसे ही सत्संग प्रोग्रामों को कर रहे हैं। वैसे देखो कितनी महँगाई है, आप अच्छी तरह से जानते हैं। महँगाई के लिए जगह-जगह आन्दोलन हो रहे हैं। पर भक्त के अन्दर में कितनी दृढ़ता और कितना उसका प्रेम है कि मानवता के लिए हर जगह हमने ऐसे पंडाल देखे और कितना उन लोगों का खर्च होता है। इसी के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि अर्जुन, तू निष्काम कर्म करता जा। यहां भी भक्त लोग निष्काम कर्म करते हैं। उनकी कोई कामना नहीं है, पर केवल यही इच्छा है कि मानव शरीर भगवान का बनाया हुआ है और उसके अन्दर जो अगाध शक्ति है, वह छिपी हुई है, उस शक्ति को जनाने के लिए इतना बड़ा आयोजन किया गया है। देखो, कितने दिन से भक्त कह रहे हैं कि पर्चे और पोस्टर छपवाओ, कितने प्रयत्न कर रहे हैं। मानव को जगाने के लिए। गुरु नानकदेव जी कहते हैं-

जागो रे जिन जागना,
अब जागन की बार।
फिर क्या जागे नानका,
जब सोवे पाँव पसार।।

यही समय है जागने का। देखो, इतिहास के पन्ने तो हमने बहुत पलट लिये, बहुत धर्म ग्रन्थ पढ़ लिये, पर उससे शान्ति नहीं मिलती है। जैसे हमने एक सुन्दर झरने का फोटो बना लिया, पर उस झरने के फोटो से हमारी प्यास नहीं मिटती है। जब तक हम झरने के पास जाकर पानी नहीं पीयेंगे, तब तक हमारी प्यास नहीं मिटेगी। ऐसे ही धर्म-शात्रों के पन्नों को चाहे तुम कितना ही पलट लो, कितना ही अध्ययन कर लो, पर उनसे तुम तत्वज्ञान को नहीं जान सकोगे। जब तक कि तुम जीते-जागते गुरु के पास नहीं जाओगे, आत्मज्ञानी की तलाश नहीं करोगे, तब तक आत्मज्ञान को प्राप्त करना संभव नहीं है।

आपने मध्य प्रदेश में यह सत्संग का जो आयोजन किया है, इसका केवल एक ही उद्देश्य है कि हे मानव, तू अपने आपको जान और मनुष्य योनि में तू जान सकता है। देखो, पशु-पक्षी ज्ञान को नहीं जान सकते हैं। इसलिए उनको हम जानने की प्रेरणा नहीं देते। केवल मानव को ही यह प्रेरणा दी जाती है कि तुम जागो। किस चीज के लिए जागना है- वह आत्मतत्व है, जिसके लिए समय-समय पर ऋषियों ने, महापुरुषों ने आवाज लगायी। देखो, अब तो हम उनको अवतार कहते हैं, पर जब वे आते हैं, तब मनुष्य उनको पहचानता नहीं है और ना ही जानता है। इसलिए न जानने के कारण से मनुष्य बहुत-सी चीजों से लाभ नहीं उठा पाता है। यह जो बहुमूल्य जीवन है, कर्म करने के लिए मिला है। मनुष्य जीवन ही एक ऐसा जीवन है, जिसमें वह कर्म भी कर सकता

है और भोग भी भोग सकता है। बाकी जितनी भी योनियाँ हैं, सब भोग योनियाँ हैं। इसलिए यह जो आत्म-तत्त्व का ज्ञान है, उसको अवश्य जानना चाहिए। देखो, बहुत सर्दी है, जिसको रोकने के लिए इतना बडा पंडाल बनाया गया, फिर भी सर्दी नहीं रुकती, तो हम गर्म कपड़े पहनते हैं, जब बारिश होती है, तो हम छतरी से बारिश को रोकते हैं, बारिश से बचाव के लिए बरसाती पहनते हैं, पर मन के लिए आप लोगों ने क्या रास्ता ढूँढा है? मन ही तो मनुष्य को अशान्त करता है। कहते हैं, मन ही मनुष्य को बंधन से मुक्त करता है और मन ही मनुष्य को बंधन में बाँधता है।

तीन दिन की छुट्टी है, इसीलिए इस छुट्टी में यह प्रोग्राम किया गया। मेरे पास अभी कश्मीर के नजदीक से एक व्यक्ति आया। वह जवान और पढ़ा-लिखा लड़का है। किसी साधु के चंगुल में आ गया था। साधु उसको पूरा ज्ञान तो बता नहीं सका, बल्कि उसके मन को भ्रमित और भयभीत कर दिया। कोई व्यक्ति उसे पंजाब में अपने फार्म पर ले गया। वह लड़का कहता है कि पाँच महीने से मैं वहाँ काम कर रहा हूँ। माँ, मुझे आत्मा की संतुष्टि नहीं है, मेरा मन शान्त नहीं है, माला जपते हुए भी मैं अशान्त था। फिर उसको एक प्रेमी मिल गया और कहा कि तू अगर वास्तव में ज्ञान चाहता है, यदि ज्ञान को जानने की तेरी प्रबल इच्छा है, तो मैं वह दरबार बताऊँगा, जहाँ तेरी जिज्ञासा पूरी हो जायेगी। तब वह प्रेमी उस लड़के को मेरे पास लाया। मेरा कहने का मतलब है कि मनुष्य को रास्ता दिखाने के लिए संत-महापुरुष ही चाहिए। देखो, जब हम किसी देश में जाते हैं, तो हमें वहां का मार्गदर्शक चाहिए। जब आपके इस ग्वालियर में भी कोई विदेशी आयेगा, तो वह यहाँ का जो मार्गदर्शक होगा, उसको साथ में ले लेगा, ताकि जो ऐतिहासिक चीजें हैं, वह उनके बारे में बता सके। ऐसे ही हम मनुष्य हैं। हम क्या हैं, किसलिए संसार में आये, इसे समझना है। बहुत-से लोग तो परिवार की चिन्ता में ही शरीर को समाप्त कर देते हैं, जहरीली गोली खा लेते हैं, आत्महत्या कर लेते हैं। वह कहता है कि मैं परिवार को सन्तुष्ट नहीं कर सका। बहुत-से लोग जीना चाहते हैं, परन्तु वृद्धावस्था आ जाती है और पूरा नहीं जी सकते हैं, इच्छा के मुताबिक जी नहीं सकते हैं। इसलिए यह संसार परिवर्तनशील है, यह स्थायी चीज नहीं है। स्थायी क्या है- भगवान का ज्ञान, उसको हमें जानना है। जब तक हम उसको जानेंगे नहीं, तब तक मन अशान्त रहेगा। देखो, भगवान श्रीकृष्ण जब पाण्डवों के यज्ञ में गये, तो उन्होंने जूठी पत्तलें उठायीं, भगवान वहाँ अतिथि बनकर गये थे, रिश्तेदार बन कर गये थे। जैसे जब बेटी की शादी होती है, उस समय परिवार के सब लोग एकजुट होकर उस शादी की शोभा को बढ़ाते हैं, वहां जो सेवा कार्य होते हैं, उन्हें पूरा करते हैं और सब मिल करके एक परिवार बने रहते हैं। भगवान कृष्ण ने, त्रिलोकी के नाथ ने उस समय वहाँ अतिथि के रूप में, एक मेहमान के रूप में जूठी पत्तल उठाने का काम अपने हाथ में लिया। सबको काम बाँटा और जूठी पत्तल उठाने का काम भगवान ने स्वयं किया। उस सेवा करने से त्रिलोकी के नाथ भगवान का महत्व बहुत बढ़ा। सेवा तो सभी ने की, पर जो भगवान का महत्व बढ़ा, वह इसलिए बढ़ा कि भगवान होते हुए त्रिलोकी के नाथ होते हुए भी उन्होंने जूठी पत्तल उठाने का काम स्वयं किया। देखो, इन्द्र देवता भी आपकी मेहनत से, आपके सहयोग से शान्त हो गये, वर्षा बन्द हो गयी। उसने सोचा कि यह प्रोग्राम होने देना चाहिए और फिर वह तो उसकी इच्छा है। एक बार एक वकील कहने लगा कि एक साधु आपके दरबार का था और बारिश पड़ रही है। वह छतरी के नीचे बैठा है और सत्संग सुना रहा है। मैं उस साधु से बड़ा प्राभावित हुआ हूँ। मैंने कहा कि इन्द्र वर्षा कर रहा है, इतनी आँधी चल रही है और तुम क्यों यहाँ पर बैठे हो? तो उस साधु ने कहा कि इन्द्र का काम है बारिश करना और हमारा काम है सत्संग सुनाना, वह अपना काम करे, हम अपना काम करेंगे। हमारे इतिहास में इस तरह के एक-से-एक दृष्टांत हैं, एक-से-एक उदाहरण हैं कि आप अच्छा काम करते रहिये, सत्संग करते रहिये, भगवान आपकी रक्षा करेगा।

> जब एक भक्त उस ज्ञान को जान लेता है, तो वह दूसरों को भी उस आनन्द को देना चाहता है। ज्ञानी की यह सबसे बड़ी खूबी है, सबसे बड़ा उसका यह उपकार है, सबसे बड़ी उसकी यह समाज-सेवा है कि वह दूसरों के लिए भी प्रयत्न करता है।

इसलिए अपने रिश्तेदारों में इस आत्मज्ञान की जरूर चर्चा करनी चाहिए। भगवान श्रीकृष्ण भी इसी बात को कहते हैं कि अर्जुन, जो ज्ञान की चर्चा दूसरों तक पहुंचाता है, दूसरों के अंदर ज्ञान की जिज्ञासा पैदा करता है, वह मुझे प्राणों से भी अधिक प्यारा है। गुरु नानकदेव जी भी कहते हैं-

आप जपे औरों को जपावे।
नानक निश्चय मुक्ति पावे।।

सत्संग बहुत बड़ी चीज है, सत्संग से ही जीवन में शान्ति मिलती है, बाकी

किसी चीज से शान्ति नहीं मिल सकती। बाल्मीकि, नारद, अंगुलीमाल आदि सत्संग के प्रभाव से ही संत बन गये।

यह भारत तो हमेशा ही सन्तों का देश रहा है। भारत भूमि ऋषियों और अवतारों की भूमि है, जहाँ मां जानकी ने जन्म लिया। आज देश की स्थिति अच्छी नहीं है, लोग संत-महापुरुषों की शिक्षाओं को भूलते जा रहे हैं। आपने दशहरा देखा होगा। माता सीता रावण से कहती हैं-

ऐ रावण! तू धमकी दिखाता किसे।
मुझे मरने का खौफ् खतर ही नहीं।।
तू सोने की लंका का मान करे।
मेरे आगे तो मिट्टी का घर भी नहीं।।

वनवासी राम की पत्नी सीता यदि तपस्वी नहीं होती, तो आज राम, मर्यादा पुरुषोत्तम राम नहीं माने जाते। सीता भी राम के साथ-साथ उनकी अर्धांगिनी बनकर मर्यादा और धर्म का निर्वहन करती रहीं।

इसलिए गृहस्थ का जीवन जो होता है, वह त्याग का जीवन होता है। जो एक लंगोटी पहन लेता है, शरीर में भभूति लगा लेता है या कपड़ों को त्याग देता है, उसको त्याग नहीं कहते। मन का त्याग ही त्याग कहलाता है। जिस मन के अन्दर समुद्र की तरह लहरें चलती हैं, जो मन बहुत चंचल है, उसको रोककर भजन में लगाना, गुरु दरबार की सेवा में लगाना ही त्याग है। शरीर सोया रहता है और मन स्वप्न में भी मनुष्य को बांधता रहता है। इसलिए यह जो मन की स्थिति है, यह हर समय दुःखदायी रहती है। जब अन्दर आत्मा में लौ लगायेंगे, मन को अन्तर्मुखी करने का जब हम साधन जानेंगे, तभी यह मन सुखदायी होगा। आज चिल्ला तो सब रहे हैं कि देश को बचाना है, पर देश कैसे बचेगा? जब तक राजनीति और धर्म का मेल नहीं होगा, तब तक रामराज्य कैसे होगा? एक टांग हो गई लम्बी और दूसरी टांग हो गई छोटी, तो दोनों का आपस में तालमेल कैसे होगा। जिस अध्यात्म ज्ञान को जानकर हमने अपने आपको अंदर से मजबूत बनाना था, उसका तो हमने त्याग कर दिया। बड़े-बड़े मिनिस्टरों को अध्यात्म ज्ञान को जानने के लिए समय नहीं है, धर्म की बात सुनने के लिए समय नहीं है। नेता कहते हैं- धर्म हमारा विषय नहीं है, केवल साधु ने ही ठेका ले रखा है। जो बड़े-बड़े नेता बने हैं, राजा बने हैं, वे कहते हैं- उनका यह विषय नहीं है। जब राजा ही धर्मात्मा नहीं बनेगा, राजा ही प्रभु का चिन्तन नहीं करेगा, तो फिर कौन करेगा? यथा राजा तथा प्रजा।

> जो एक लंगोटी पहन लेता है, शरीर में भभूति लगा लेता है या कपड़ों को त्याग देता है, उसको त्याग नहीं कहते। मन का त्याग ही त्याग कहलाता है। जिस मन के अन्दर समुद्र की तरह लहरें चलती हैं, जो मन बहुत चंचल है, उसको रोककर भजन में लगाना, गुरु दरबार की सेवा में लगाना ही त्याग है।

इसलिए भारतवासियों! भारत के हर नागरिक के लिए मेरी यह कामना है कि सब अपनी शक्ति को जागृत करें, मजबूत बनें। जब मनुष्य स्वयं मजबूत होता है, तो वहां दूसरे की ताकत समाप्त हो जाती है। मैं श्री हंस जी महाराज की पत्नी हूं, उन्होंने मुझे जो ज्ञान दिया है, वह अनमोल है। जिससे मैं जिधर जाती हूं, उधर ही चिराग जला रही हूं।

जिधर हम जाते हैं हजारों, लाखों जनता हमारे पीछे आती है। श्री हंस जी महाराज ने पहले ही लोगों को चेताया कि ऐ मानव! तू प्रभु का नाम जान। तू अध्यात्म में अपने आपको लगा, तभी शान्ति होगी और आज लोग लकीर के फकीर बन गए। चाहे तुम कुछ भी कर लो, लेकिन उस सबसे शान्ति हो नहीं सकती। आज मनुष्य भयंकर बनता जा रहा है। आज एक छोटा बालक जो दो और तीन साल का है, उसकी बातों का तुम जवाब नहीं दे सकते। पर, जो बड़े-बड़े पांच-पांच, छह-छह फुट के मनुष्य बन गए, इनके दिमाग को तुम कैसे बदलोगे? उन बातों का जवाब कैसे दे सकते हो?

रावण को मारने के लिए तो एक राम हुए और अब असंख्य रावण बनते जा रहे हैं, तुम इनको कैसे मारोगे? ये तो मनुष्य को तबाह करते जायेंगे। जिसकी वृत्ति खराब हो चुकी है, उसको तुम कैसे बदलोगे, तुम्हारे पास क्या साधन है? फांसी दे सकते हो, काल कोठरी में डाल सकते हो, पर उसका मन कैसे बदलोगे? तुम्हारे पास कोई ऐसी चीज नहीं है, जिससे उनको बदल सकते हो। जो घर की बहू होती है, घर की लक्ष्मी होती है, जिससे घर-गृहस्थ चलता है, जिसके आने पर घर में कुल दीपक जन्म लेता है और वही संतान, वही बच्चा परिवार का नाम रोशन करता है, उसी बहू की आज होली जलाई जा रही है। जो मायावादी होता है, वह तो हमेशा नाश ही करता है और जो सीता की तरह आचरण करती है, ऐसी पतिव्रता नारी की आज भी सर्वत्र पूजा होती है। सीता ने रावण का डर नहीं माना, वह रावण से भयभीत नहीं हुई, क्योंकि वे मर्यादा पुरुषोत्तम राम की पत्नी थीं। उन्होंने अपने जीवन में पतिव्रता धर्म और मर्यादा का पालन किया। आज की नारी को भी माता सीता के चरित्र से सीख लेने की जरूरत है।

आत्मज्ञान के बिना सब कर्म निरर्थक हैं

माताश्री मंगला जी

प्रेमी सज्जनों! अभी आप लोगों ने भजन सुना, जिसका अभिप्राय है कि संसार से एक दिन सभी को जाना है। इस संसार में तो किसी की चापलूसी चल जायेगी, किसी अफसर की सिफारिश चल जायेगी, लेकिन प्रभु के यहां कोई सिफारिश नहीं चलती। वहां तो सिर्फ अपने कर्मों की सिफारिश चलेगी। कर्मों की कमाई ही अन्त समय में हमारे साथ जाती है। उसी के अनुसार हमको फल मिलता है। आप लोग बड़ी देर से भजनों का आनन्द ले रहे हैं। संत-महात्माओं से सत्संग-विचार सुन रहे हैं।

बड़ी खुशी की बात है कि इस बस्ती शहर में कई साल बाद ऐसा सन्त समागम हो रहा है। श्री माता जी यहां पर बहुत समय पहले आये थे। हम और सभी महात्मा-बाईगण पूरे विश्व भर में आत्मज्ञान प्रचार के लिये जाते रहते हैं। जब श्री भोले जी महाराज माघ मेले में इलाहाबाद आये, तो महात्मा जी ने प्रार्थना की कि बस्ती में दस साल से सत्संग नहीं हुआ। उन्होंने उन्हें समय दे दिया और उनके वचनों के अनुसार हमें यहां सत्संग करने आना पड़ा। आप लोगों को जब वचन दिया है, तो उसको उन्होंने निभाया। हम तुम्हारे क्षेत्र में सत्संग करने आये। कहा गया है-

सन्त की वाणी अटपटी,
झटपट लखे न कोय।
जो झटपट लखे तो,
चटपट दर्शन होय।।

जिसकी जैसी वृत्ति होगी, जैसे जिसके विचार होंगे, शब्दों का वह वैसा ही अर्थ निकालता है। सन्तों की वाणी बड़ी अटपटी होती है, वह सहज में समझ में नहीं आती, लेकिन जब समझ में आ जाती है, तो कहा कि 'चटपट दर्शन होय' अर्थात्

जल्दी ही भगवान के दर्शन हो जाते हैं। समाज में मनुष्य जन्म लेता है और ज्ञान के बिना भटकता रहता है। गुरु नानक देव जी गुरुग्रन्थ साहब में फरमाते हैं-

लख चैरासी भ्रमदिया,
मानुष जन्म पायो।
कह नानक नाम सम्भाल,
सो दिन नेड़े आयो।

सन्तों ने कहा कि नाम को संभालो। उन्होंने कौन-से नाम को संभालने के लिये कहा? रामचरित मानस में भी कहा है-

बड़े भाग मानुष तन पावा।
सुर दुर्लभ सद्ग्रन्थन्हि गावा।
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा।
पाइ न जेहि परलोक संवारा।।

हे मनुष्य! सबसे बड़ी भगवान की कृपा तुझे यही मिली कि तुझे मानुष तन मिला। जिस तन के लिए देवता लोग भी तरसते हैं। पर, शरीर प्राप्त करके तूने क्या किया? धन-वैभव कमाने के लिये भोग-विलास में अपना सारा जीवन गंवा दिया और भगवान की याद नहीं आई। जब अन्त समय में बिस्तर पर लेट गया, शरीर रोगों का ढेर बन गया; तब भगवान की याद आई। एक नली नाक में लगी है, एक नली कान में लगी। व्यक्ति को जीवित रखने के लिये ऑक्सीजन दी जा रही है, उस वक्त हम भगवान का भजन-सुमिरन नहीं कर सकते हैं। तब हमारे शरीर की ताकत नष्ट हो जाती है, सिर्फ शरीर पड़ा रहता है। तब भजन-सुमिरण नहीं कर सकते। इसीलिये यह जो देव-दुर्लभ मनुष्य तन मिला है, समय रहते इससे भजन की कमाई कर लो। यह शरीर केवल भगवान की भक्ति करने के लिये मिला है। अगर भगवान की भक्ति में आनन्द नहीं होता, तो मीराबाई कभी राजमहल नहीं छोड़ती। मीराबाई खजाने को न छोड़ती, वह रनिवास को न छोड़ती और वह भगवान की प्रेम भक्ति को न प्राप्त करती। मीराबाई कहती है-

सखी री मैं तो गिरधर के रंग राती।
लोक पिया परदेश बसत हैं,
लिख-लिख भेजें पाती।
मेरे पिया मेरे हदय बसत हैं,
ना कहूँ आती न जाती।।

सन्तों की वाणी में जो रहस्य है, उसका आध्यात्मिक अर्थ है। वह कहती है कि दुनियां के पति परदेश बसते होंगे, तो

उनके पास से चिट्ठियां आती-जाती होंगी, पर मेरे पिया मेरे हृदय बसत हैं, ना कहूँ आती न जाती। मीराबाई कहती है कि मेरा पिया मेरे हृदय में बसता है। वह कहीं आता-जाता नहीं है, हृदय में ही निवास करता है। अभी हरिद्वार से आये महात्मा जी के विचारों को भी आपने सुना। सन्त लोग किस-किस तरह मानव को समझाने की कोशिश करते हैं। बाबा नानक कहते हैं कि-

जागो रे जिन जागना,
अब जागन की बार।
फिर क्या जागे नानका,
जब सोवे पाँव पसार।।

जब हम संसार से शरीर छोड़कर चले जायेंगे, तो फिर क्या जागना। जब मनुष्य की मृत्यु होती है, तो कहते हैं कि फलाना आदमी मर गया। आज वह शरीर छोड़ गया। कोई यह नहीं कहता कि उसका शरीर मर गया। आत्मा अगर शरीर में न हो, तो शरीर तो बिना आत्मा के मुर्दा ही है, आत्मा ही हमारे शरीर को चलाने वाली शक्ति है। जब वह शरीर से चली जाती है, तो शरीर मिट्टी बन जाता है। जब तक शरीर में आत्मा है, तब तक यह शरीर ही मन्दिर है। तभी बाबा नानक जी ने कहा-

मन मन्दिर तन भेष कलन्दर,
घट ही तीरथ नावां।
एक सबद मेरे प्राण बसत है,
बहुरि जनम नहिं आवां।।

संतों ने कहा कि यह शरीर ही मन्दिर है। कहा कि-

मन मथुरा दिल द्वारिका,
काया काशी जान।
दसवाँ द्वारा देहरा,
तामें जोति पहचान।।

इस शरीर में ही हम ज्योतिरूप परमात्मा के दर्शन कर सकते हैं। अगर हमें घी की बाती जलाने से भगवान की परम ज्योति की प्राप्ति हो जाती, तो रामचरित मानस में गोस्वामी तुलसी दास जी भक्ति के बारे में ऐसा नहीं कहते कि-

परम प्रकाश रूप दिन राती।
नहिं चाहिअ कछु दिया घृत बाती।।

उस परमप्रकाश को देखने के लिये हमें बाहरी घी-बाती की जरूरत नहीं है। हमें प्रभु का दर्शन करने के लिये अन्दर के प्रकाश की जरूरत है, हमें आत्मिक उत्थान की जरूरत है। आत्मिक उत्थान हमें सन्तों की वाणी से प्राप्त होता है। जैसे वेद-शास्त्रों की कोई बात समझ में नहीं आती। हमें अंग्रेजी या हिन्दी का कोई शब्द समझ में नहीं आता, तो हम उसका अर्थ शब्दकोष में ढूंढ़ते हैं। उस शब्द का अर्थ हम शब्दकोष में से निकालते हैं। ऐसे ही जब सन्तों की वाणी समझ में नहीं आती, फिर हम वेद-पुराणों को खोजते हैं। रामायण, गीता को पढ़ते हैं। गीता चाहे हम हजार बार भी पढ़ लें, लेकिन तत्वदर्शी गुरु महाराज के बिना हमें वह आत्मा का ज्ञान समझ में नहीं आयेगा, जो आत्मा का ज्ञान भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को लड़ाई के मैदान कुरूक्षेत्र में दिया। अगर भगवान श्रीकृष्ण वह आत्मज्ञान अर्जुन को नहीं देते, तो अर्जुन लड़ने को तैयार नहीं होता। युद्ध से पहले वही अर्जुन कहता है कि हे प्रभु! जैसे हवा की गठरी बांधना मुश्किल है, वैसे ही मैं इस चंचल मन को नियन्त्रण में नहीं कर सकता। मन को नियंत्रण करने का मेरे पास साधन नहीं है। हे कृष्ण! मेरे को उचित राह दिखाओ, मेरा मार्गदर्शन करो। तब भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं-

> यह जो देव-दुर्लभ मनुष्य तन मिला है, समय रहते इससे भजन की कमाई कर लो। यह शरीर केवल भगवान की भक्ति करने के लिये मिला है।

नाना शास्त्र पठेन् लोके,
नाना देवत पूजनम्।
आत्मज्ञानं बिना पार्थ,
सर्व कर्म निरर्थकम्।।

हे पार्थ! मैं तुझे वह आत्मा का ज्ञान देता हूं, जिससे तू मेरे वास्तविक स्वरूप को देख सकता है। बाह्य नेत्रों से तू मुझे नहीं देख सकता। मेरे शरीर को तू इन नेत्रों से देख सकता है, पर मेरे परम अलौकिक स्वरूप को इन नेत्रों से नहीं देख सकता है। इसके लिये मैं तूझे ज्ञान चक्षु देता हूँ। तब वही अर्जुन, भगवान श्रीकृष्ण के चरणों में दण्डवत् प्रणाम करता है और कहता है कि हे प्रभु! आज तक मैं आपको मानव समझता था, अपना रिश्तेदार समझता था, द्वारिका का राजा समझता था, पर हे कृष्ण! तुमने मुझे आत्मज्ञान देकर, तीसरा नेत्र दे करके, अपने पारलौकिक रूप का दर्शन करा दिया।

गुरु महाराज जी की असीम कृपा से हमें भी अर्जुन की तरह ऐसी भक्ति का ज्ञान मिला, ऐसा ज्ञान नेत्र मिला, जिससे प्रभु की ज्योति का हमें दर्शन हुआ। 14 वर्ष के वनवास के बाद भगवान राम जब अयोध्या में वापस लौटे, तो उन्होंने अयोध्यावासियों को हाथ जोड़कर प्रार्थना की-

औरउँ एक सुगुप्त मत,
सबहिं कहउँ करि जोरि।
संकर भजन बिना नर,
भगति न पाबइ मोरि।।

भगवान शंकर के भजन के बिना नर मेरी भक्ति नहीं प्राप्त कर सकता। भगवान श्री राम यह भी तो कह सकते थे कि हे अयोध्यावासियों! तुम शास्त्रों को पढ़ो, राम-राम रटो, माला फेरो, तुम्हें भगवान मिल जायेगा; लेकिन भगवान राम ने तत्व की बात कही, क्योंकि सन्त-महापुरुष अपने भक्त को बरगलाना नहीं चाहते, वे उसको पथ-भ्रष्ट नहीं करते हैं।

वे भक्त को आत्मज्ञान देते हैं। कहते हैं- हे मनुष्य! तेरी आयु बहुत कम है, तुझे यह मनुष्य शरीर थोड़े समय के लिये मिला है। इस अल्प समय में हम सच्ची प्रभु की भक्ति सन्त-महापुरुषों से प्राप्त करें, जिससे हम उस परमप्रभु को प्राप्त कर सकें। कहा कि शंकर के भजन बिना नर तू मेरी भक्ति नहीं प्राप्त कर सकता। उधर भगवान शंकर ने यह कहा कि-

महामंत्र जोई जपत महेसू।
काशी मुकुति हेतु उपदेसू।।

भगवान शंकर ने भक्तों के कल्याण के लिये उसी ज्ञान का प्रचार काशी नगरी में किया। वह कौन-सा ऐसा महामंत्र था, जो भगवान शिव ने भी जपा! माँ पार्वती तो विष्णु सहस्र नाम का पाठ कर रही थीं। भगवान शंकर को कहीं जाना था, भगवान कहने लगे कि उमा! समय बहुत हो चुका है। हमें जाना है। मां पार्वती कहने लगीं कि प्रभु! अभी तो हमें विष्णु सहस्र नाम का पाठ करना है। मेरे को तो जाप करने के लिये काफी समय चाहिये। भगवान शंकर कहते हैं कि-हे उमा! मैं तुझे ऐसे पावन नाम का सुमिरण बताता हूं, जो नाम सर्व लोकों में प्रख्यात है, जिसका सुमिरण देवता लोग भी करते हैं। उस नाम का सुमिरण हमेशा कर सकते हैं। सहस्र नामों के जप का फल तुम्हें उस नाम के सुमिरण से मिल जायेगा। एक समय भगवान शिव भजन कर रहे थे, उनके नेत्र बन्द थे। तो मां पार्वती सोचने लगीं कि सारा विश्व तो भगवान का ध्यान-सुमिरण करता है, पर भगवान शिव किसका ध्यान सुमिरण करते हैं, आज उनसे मैं अवश्य पूछूंगी। जब मां पार्वती ने भगवान शिव से पूछा कि-'हे प्रभु! आपको तो सारा विश्व याद करता है, भक्त लोग आपके ही नाम का जप करते हैं; पर आप नेत्र बन्द करके किसका ध्यान-सुमिरण करते हैं? तब भगवान शिव कहते हैं कि उमा! क्योंकि तुम मेरा ही स्वरूप हो, मेरी शक्ति हो। आज तुमने आर्त भाव से उस प्रभु के नाम के बारे में पूछा है, आज मैं तुम्हें उस गुप्त नाम का बोध कराता हूं। भगवान शिव ने उमा को प्रभु के उस पावन नाम का बोध कराया। आप लोग सोचो, विचारो कि वह कौन-सा नाम है, जिस नाम की महिमा स्वयं भगवान राम ने भी गाई। रामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी उल्लेख करते हैं-

> गीता चाहे हम हजार बार भी पढ़ लें, लेकिन तत्वदर्शी गुरु महाराज के बिना हमें वह आत्मा का ज्ञान समझ में नहीं आयेगा, जो आत्मा का ज्ञान भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को लड़ाई के मैदान कुरूक्षेत्र में दिया।

राम एक तापस तिय तारी।
नाम कोटि खल कुमति सुधारी।

कहा कि राम ने तो एक तपस्वी नारी अहिल्या का उद्धार किया, पर राम के नाम ने तो करोड़ों कुमतियों को सुधार दिया। आज यहां पर यह जो भक्त समाज बैठा है, वह भी उस प्रभु के पावन नाम को जाने। सबका नाम हमारे माता-पिता ने जन्म के बाद रखा। कोई मुसलमान है, तो उसका नाम रहीम है, कोई हिन्दू है, तो वह राम है, कोई क्रिश्चियन है, तो उसका नाम रॉबर्ट रखा हुआ है। कोई सिक्ख है, तो उसका नाम रणवीर सिंह है। सबके बाहरी शरीर के नाम अलग-अलग हैं, पर जब हम अन्दर से देखें, तो हम सबके अन्दर एक ही जैसी स्वाँसें चल रही हैं। सबका संसार में जन्म हुआ है और सबको एक दिन इस संसार से चले जाना है। अपने-अपने धर्मानुसार मनुष्य का जन्म होता है, पालन-पोषण होता है, उसी के अनुसार सब शरीर छोड़ देते हैं। मृतक शरीर को अपने रीति-रिवाज के अनुसार कोई मिट्टी में दबा देता है, कोई अग्नि संस्कार कर देता है।

हमारे देश में उद्दालक नाम के ऋषि हुए। उनका बेटा श्वेतकेतु जब ऋषि के आश्रम से पढ़कर आया, तो उनके पिता ने श्वेतकेतु की परीक्षा लेनी चाही। बेटा कहता है पिता जी! मैंने तो सारे वेद-पुराण पढ़ लिये। वेद, उपनिषद् आदि सबका मैंने अध्ययन कर लिया। अब मुझे किस चीज की जरूरत है? पिता जी समझ गये कि बालक श्वेतकेतु के मन में सांसारिक विद्या का अभिमान आ गया है। इसने तो अभी किताबी शिक्षा प्राप्त की है। उन्होंने उससे पूछा कि जो ब्रह्म सर्व व्यापक है, क्या तुम उसे जानते हो? उसने कहा- नहीं। तब उन्होंने उस व्यापक ब्रह्म का बोध कराने के उद्देश्य से कहा- बेटा! एक लोटे में तू पानी लेकर आ और साथ में थोड़ा-सा नमक भी ले आना। वह लोटे में पानी और नमक लेकर आता है। उसके पिता कहते हैं कि पानी में इस नमक को मिला। बेटे ने पानी में नमक मिला दिया और उसे पानी में घोल दिया। पिता ने कहा कि अब तू इस लोटे के पानी को ऊपर से नीचे से, बीच से चारों तरफ से चख। पानी तो चारों तरफ से नमकीन था। फिर उन्होंने कहा बेटा! अब पानी में से तू इस नमक को अलग कर दे। बेटा कहता कि पानी से मैं नमक को कैसे निकालूं। नमक तो पूरी तरह से इस पानी में घुल चुका है। पिता ने कहा बेटा! जैसे तूने पानी में नमक मिलाया है और यह पानी नमकमय हो गया है, ऐसे ही भगवान की शक्ति भी सबमें समायी हुई है। जिस तरह पानी को देखने से नहीं बल्कि चखने से पता चला कि यह नमकीन है। ऐसे ही वह भगवान की शक्ति भी इन बाह्य आंखों से नहीं दिखायी देती, उसके लिए दिव्य नेत्रों की जरूरत होती है।

REALIZATION OF GOD IS POSSIBLE ONLY IN THIS HUMAN FORM

SHRI HANS JI MAHARAJ

When a saint looks out for your interest and shares his knowledge through discourses for the benefit of people, society tends tocast aspersions by labeling him as a cult leader, or call him a fake. The great poet saint Surdas Ji said in his bhajan:

The nature of karma is unfathomable,

The ignorant rule,

While the wise are on the streets.

I gave a discourse in Lucknow a while back. I was not inclined to, but did it at the request of the disciples. In that program a certain person was invited by the organizers, he was the speaker of the legislative assembly (Vidhan Sabha) of the previous government. He heard Satsang during the entire course of the program, and remarked at end that the mind is very fickle and that it is extremely difficult to control it. When he began to leave, I said that if it is extremely difficult in this human form, then imagine how would that hardship compare in the life-form of a pig, or a dog?

If this human life is not used to realize 'God', then the next life form received might just be that of a donkey. What do you think will happen then? I have often seen that in the sweltering summers the washerman washes clothes on the riverside, and the donkey is often tied somewhere nearby exposed to the extreme weather, without food or water. At the end of the day, the washerman piles the washed clothes on to his back and sits atop and rides back home. So, think hard that if you receive this birth, what then will you do for your salvation?

Today people talk big things about spirituality and inner peace. But if you ask them what spirituality is? They barely know. In the Geeta, Lord Krishna says that in all the different types of knowledge that exists in the world, True Knowledge of the Self is me. Know your True Self, and you will know me. There are several renowned educational establishments today, I wonder if the intellectuals teaching there can even explain the meaning of half a quatrain. Or even the meaning of 'Being part of Oversoul, man's soul is eternal'. How is 'God' the father, and the man borne of Him?

Years are spent turning the rosary, yet uncontrolled and restless remains the mind,

Stop turning the rosary beads, turn the true name within and master your mind.

The verse above is a doha by the Saint Tulsidas Ji which is found in many textbooks, however a handful of people understand its true meaning and continue to preach it to children without knowing.

It must be understood that souls that are liberated from the entrapments of this world reside here. God is everywhere and these free spirits are one with God. There are three things that are of paramount value at any age. If you go to the king, ruler, or powerful person of the time, he will take care of you, ask about your welfare, and recognize and value your skills. In the past Raja Bhoj recognized people with niche qualities or skills and gave them a welcome befitting those.

Akbar the great too collected gifted, brilliant people and included them in his court. He was known to have nine such jewels (men) in his court and they often found solutions to his problems and questions.

It is said in the Ramayan that there has never been anyone in this world that received power and remained unaffected by it. Lord Ram had complete faith in his brother Bharat. When Bharat went to visit Lord Ram during his exile in the forest there was a small dust cloud created by his movements. Lord Ram asks Laxman to see who was approaching. Laxman confirms that Bharat was approaching, but says that Bharat was crafty and was probably coming to get rid of Ram. He suspected that Bharat who was ruler of the kingdom in the absence of Lord Ram wanted to continue ruling even after Ram's term of exile was over and despite his popularity amongst the people. Ram dismissed Laxman by saying that if Laxman wanted to rule he would make Bharat handover the kingdom to him, but he could never

doubt Bharat's intent. It turned out that Bharat was the epitome of honesty and loyalty.

I received Updesh 'knowledge' from my master in 1922-23, and in 1926 I was ordered by my Guru to impart True Knowledge to others. At first I went to several people in positions of power and authority, thinking that if they adopt the path of knowledge, their subjects will follow, and that is what typically happens. It is known that only when the ruler of Kashi, became Saint KabirDas Ji's disciple; did Kabir Das Ji stop being troubled and ridiculed in society. Once that happened, King Dharamdas used his wealth to spread his Gurus teachings far and wide. When Kings follow the path of True Knowledge, their subjects follow, and the entire society benefits from it.

Do you know why Buddha's teaching made its mark worldwide? It is because king Ashoka became his disciple and put the power of his entire wealth in spreading his Gurus teachings. He even sent his son and daughter to preach and spread the word of their Guru far and wide. Thus, I too went to several Kings at the time, but they always looked at me with suspicion. They assumed that I want something from them, whereas I only wanted to offer the treasure of knowledge I had received. I bear no ill-feeling towards them, however for their small material treasures, they renounced the unbound wealth of True Knowledge.

There is a story about a frog that lived in a well. Once he met a frog that lived in the sea. They got talking and the frog from the well tried to ascertain the size of the sea. So, he took one leap and asked the sea frog if that was how big the sea was, but the sea frog said no it was bigger, the first frog took another leap, and another, until he has taken a complete round of the well to assess the size of the sea. Once he has covered the well, he announced that the sea could be no bigger than that. The kings I met were no different. When I met them, at first, they said they had no time. A few years later I met them again, and said perhaps now you have time. They had lost their kingdoms.

I often remark that in the villages there are grindstones in which grain is ground and flour is made, and in cities there are flour mills that take in grains and make flour of different kinds. Similarly man today consumes what he can in the form of food, and generates waste. I call the men that have no time for self-realization, waste mills. Once a poor saint met a king and told him that his life situations was far better than the kings. Perplexed the king comments that it cannot be so, but the saint explains that once they're in deep sleep neither knows whether they sleep on stone or on a luxurious bed. Thus, their nights so far were equal. The king wanted to know how the poor saint's situation was better than his? He proceeds to tell him that despite being the king and living in luxury he is constantly plagued by fear and worry of losing his wealth, and succumbing to his enemies. The poor saint on the other hand sleeps free, with peace of mind and without fear of anything. Furthermore, I meditate on God's true name and that is what makes my life far better than yours.

Coming back to what I was saying, there are three things in any age that are relevant. King of the present, historically there have been great kings like Raja Harishchandra, Raja Bali but you will not benefit from them today! King Mordhvaj was a supreme devotee of the Lord. His devotion was tested by God through his son. He was asked to sacrifice his son, and the king knowing his son to be God's own blessing sacrificed his son, thereby passing his test and his son was granted life due to his unwavering faith.

Such souls, exist even today, but how can you recognize it? You do not have True Knowledge. You only recognize the outer forms, that is all you know. Thus, you cannot benefit from the Kings of the past. It is only an influential person, or person of authority in the present that can help you with a job, or your business. Similarly, a skilled doctor of the present day that can help cure you of your illnesses, not some great physician that lived centuries ago. Similarly, singing praises of past Saints, and masters will not yield anything. You need to go to a True Master of the present. Only when you seek them, their wisdom, will they reveal the True Knowledge of the Self to you.

The Geeta says, seek the True Master humbly surrender to him, serve him, and request him to share his knowledge, and he will explain and reveal the essence of True Knowledge to you. If you seek the truth, do this, and you will definitely benefit from it.

The Ramayan describes the character and life of Lord Ram. The Geeta describes the activities of the Divine, Lord Krishna. There is no sacred book, or scripture which does not recount the glory of the Guru. The glory and greatness of a True Guru is infinite. This is why great men always remember and meditate on their Masters first. It is said–That the mere remembrance of the toe nail of a true Master is enough to reveal the Divine Light.

उल्लास की इंद्रधनुषी फुहारों का सनातन त्योहार होली आज भी है प्रासंगिक

पुरानी पीढ़ी की दानवी सोच के परित्याग और नई पीढ़ी के प्रतीक प्रह्लाद की भक्ति भावना के संपोषण के साथ सबको अपनाने और गले लगाने का पावन पर्व होली, जिसमें पिछली पीढ़ी की नकारात्मक सोच से उपजे सारे मनोमालिन्य दूर कर नई उमंग से पैदा हुई भक्ति भावना की सकारात्मक सोच को स्वीकार किया जाता है। होलिका दहन की आग में नकारात्मकता भस्म हो जाती है और सकारात्मकता की उमंगों का रंग समाज में चारों तरफ नैसर्गिक रूप से उल्लास बिखेर देता है। होली पूरे भारत में परंपरागत रूप से मनाया जाने वाला एक ऐसा उत्सव है, जो न केवल उमंग और उल्लास का प्रतीक है, बल्कि जीवन के गहरे दर्शन को भी उजागर करता है। यह पर्व हमें हमारी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ता है और समाज में व्याप्त भेदभाव, कटुता और नकारात्मकता को समाप्त करने का अवसर प्रदान करता है। होली का आरंभ एक पौराणिक कथा से प्रेरित है, जिसमें हिरण्यकशिपु के दंभ और प्रह्लाद की भक्ति का उल्लेख मिलता है। यह कथा केवल बुराई पर अच्छाई की विजय का संदेश नहीं देती, बल्कि यह हमें यह भी सिखाती है कि सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति कितना भी कठिन समय क्यों न देखे, अंतत: विजय उसी की होती है।

होलिका दहन, इस पर्व का आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आधार है। यह केवल परंपरागत अनुष्ठान नहीं है, बल्कि इसका गहरा अर्थ है। होलिका का जलना और प्रह्लाद का सुरक्षित रहना यह दर्शाता है कि जब अहंकार और अधर्म सीमा पार कर जाते हैं, तो उनका नाश निश्चित है। यह पर्व हमें अपने भीतर की बुराइयों, जैसे क्रोध, ईर्ष्या और लालच को पहचानकर उनका अंत करने का आह्वान करता है। यह आत्म-विश्लेषण और आत्म-परिष्कार का समय है, जब हम अपने विचारों और कार्यों को नई दिशा दे सकते हैं। धुलेंडी, जो होली का दूसरा और प्रमुख भाग है, रंगों का पर्व है। रंग, जो जीवन के विभिन्न आयामों के प्रतीक हैं, इस दिन एकता और समानता का संदेश देते हैं। यह दिन हमें सिखाता है कि समाज में हर व्यक्ति, चाहे वह किसी भी वर्ग, संप्रदाय या पृष्ठभूमि का हो, समान रूप से महत्वपूर्ण है। रंगों की यह विविधता यह

होली पर विशेष

दर्शाती है कि सामूहिकता में ही समाज की शक्ति निहित है। जब लोग एक-दूसरे पर रंग डालते हैं और गले मिलते हैं, तो वे इस बात को दोहराते हैं कि आपसी द्वेष और कटुता को मिटाकर ही सच्चे आनंद की अनुभूति होती है। याद रहे, होली केवल परंपरा का पालन नहीं है, यह एक ऐसा अवसर है, जो हमें आत्म-अवलोकन करने और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने का समय देता है। आज, जब आधुनिक जीवनशैली के कारण रिश्तों में दूरी बढ़ रही है, होली का यह संदेश पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक

हो जाता है। यह पर्व हमें यह याद दिलाता है कि गिले-शिकवे और द्वेष को त्यागकर ही रिश्तों में मिठास लाई जा सकती है। इसके साथ ही, होली हमें प्रकृति से जुड़ने और उसके संरक्षण का संदेश भी देती है। आधुनिक समय में, जब जल संकट और पर्यावरणीय क्षरण जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं, होली को पर्यावरण के अनुकूल बनाना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। प्राकृतिक रंगों का उपयोग, जल की बचत और होलिका दहन में अनावश्यक संसाधनों के उपयोग से बचाव जैसे प्रयास, इस त्योहार को और अधिक सार्थक बना देते हैं। समाज में होली की भूमिका केवल उत्सव तक सीमित नहीं है। यह पर्व हमें सामाजिक समरसता और एकता का महत्व सिखाता है। यह हमें यह एहसास दिलाता है कि जाति, धर्म और भाषा के आधार पर जो विभाजन हमने बनाए हैं, वे क्षणिक हैं। सच्ची मानवता इन सीमाओं से परे है। होली का वास्तविक उद्देश्य है- सभी के साथ प्रेमपूर्वक और समानता के भाव से जुड़ना है।

आज की युवा पीढ़ी के लिए होली का संदेश और भी महत्वपूर्ण है। यह पर्व एक पुल का कार्य करता है, जो पुरानी पीढ़ी की परंपराओं और नई पीढ़ी की आधुनिक सोच के बीच संतुलन बनाता है। प्रह्लाद की भक्ति और होलिका के अहंकार का प्रतीकात्मक अर्थ समझाने के साथ-साथ, यह पर्व नई पीढ़ी को यह प्रेरणा देता है कि वे सत्यनिष्ठा और सकारात्मक दृष्टिकोण को अपनाएं। इस पर्व का सबसे बड़ा महत्व है- सभी को अपनाने की भावना। होली हमें यह सिखाती है कि चाहे हमारे बीच कितने भी मतभेद क्यों न हों, हमें एक-दूसरे के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। यह पर्व हमें यह याद दिलाता है कि सच्चा आनंद केवल अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के साथ खुशियां बांटने में है। सच कहिए तो होली केवल रंगों का त्योहार नहीं, बल्कि जीवन में उमंग का रंग भरने का एक अवसर है। यह पर्व हमें अपने भीतर की बुराइयों को समाप्त करने, रिश्तों को मजबूत करने और समाज में सकारात्मकता और एकता को बढ़ावा देने का संदेश देता है। इस वर्ष, आइए हम होली को केवल उत्सव नहीं, बल्कि आत्म-परिष्कार, सामाजिक समरसता, और पर्यावरण संरक्षण का माध्यम बनाएं। यही होली का वास्तविक अर्थ और संदेश है। आएं, हम सब प्रतीकात्मक रूप से होलिका की अग्नि में बुराइयों को जलाएं और अच्छाई के रंगों से जीवन को महकाएं। यही होली की सच्ची परिभाषा है।

यह पर्व प्रभु भक्ति में सरावोर होने का भी पर्व है, भक्ति का रंग ऐसा चढ़े कि प्रभु-परमात्मा के अतिरिक्त कुछ भी नजर ही नहीं आए। यह पर्व हमारे अन्दर परमात्मा के प्रगटीकरण का उत्सव है, जो हमारे दुष्ट भावों और विघ्नों को विनष्ट कर उसके प्रति अनन्य विश्वास उत्पन्न करता है। हमारे भक्ति पथ में प्रहलाद के जीवन की भांति चाहे कितनी भी बाधाएं उत्पन्न की जाएं, किन्तु हमारी प्रभु भक्ति, प्रेम और विश्वास में रंच मात्र भी फिसलन न आए। ऐसी दृढ़ प्रेम भक्ति के आने पर ही जीवन में होली का त्योहार वास्तविक रूप में फलित होता है और यही इस पर्व को मनाने की सार्थकता भी है। ■

भीष्म पितामह का धर्मराज युधिष्ठिर को उपदेश

महाभारत के शांतिपर्व में पितामह भीष्म शरीर त्याग से पूर्व धर्मराज युधिष्ठिर के पूछने पर उन्हें उपदेश करते हैं। इसी क्रम में उन्होंने श्रेष्ठ पुरुषों के लक्षण, दान की महिमा आदि के संबंध में उपदेश किया, उसी संवाद का यहाँ संक्षिप्त उल्लेख किया जा रहा है। भीष्म पितामह कहते हैं- हे युधिष्ठिर! सदाचार ही धर्म का लक्षण है। सच्चरित्रता ही श्रेष्ठ पुरुषों की पहचान है। श्रेष्ठ पुरुष जैसा बर्ताव करते हैं, वही सदाचार का लक्षण है।

आचारलक्षणो धर्मः सन्तश्चारित्रलक्षणाः।
साधूनां च यथावृत्तमेतदाचारलक्षणम्।।

वे कहते हैं कि- माता और पिता केवल शरीर की सृष्टि करते हैं, किन्तु आचार्य के उपदेश से जो ज्ञान-रूप नया जीवन प्राप्त होता है, वह सत्य, अजर और अमर होता है। जिस धैर्य रूपी कुण्ड में सत्य रूप जल भरा हुआ है तथा जो अगाध, निर्मल और अत्यन्त शुद्ध है, उस मानस तीर्थ में परमात्मा का आश्रय लेकर स्नान करना चाहिए। कामना और याचना का अभाव, सरलता, सत्य, मृदुता, अहिंसा, समस्त प्राणियों के प्रति वैर-त्याग, इन्द्रिय-संयम और मनोनिग्रह- ये ही मानस तीर्थ के सेवन से प्राप्त होने वाली पवित्रता के लक्षण हैं। जो ममता, अहंकार, राग-द्वेषादि द्वन्द्व और परिग्रह से रहित तथा भिक्षा द्वारा जीवन-निर्वाह करते हैं, वे विशुद्ध अन्तःकरण वाले सज्जन पुरुष तीर्थ-स्वरूप हैं। शरीर को पानी से भिगो लेना स्नान नहीं कहलाता। वस्तुतः सच्चा स्नान तो उसने किया है, जिसने मन-इन्द्रियों के संयम रूपी जल में गोता लगाया है, वही बाहर और भीतर से भी पवित्र माना गया है। आचार-शुद्धि, मन-शुद्धि, तीर्थ-शुद्धि और ज्ञान-शुद्धि- यह चार प्रकार की शुद्धि मानी गयी है। इनमें भी ज्ञान से प्राप्त होने वाली शुद्धि सर्वश्रेष्ठ मानी गई है।

मनसा च प्रदीप्तेन ब्रह्मज्ञानजलेन च।
स्नाति यो मानसे तीर्थे तत्स्नानं तत्वदर्शिनः।।

जो मनुष्य प्रसन्न और शुद्ध मन से ब्रह्मज्ञान रूपी जल के द्वारा मानस तीर्थ में स्नान करता है, उसका वह स्नान ही तत्वदर्शी ज्ञानी का स्नान माना गया है।

दान की महिमा और पात्रता का वर्णन करते हुए भी पितामह कहते हैं कि जो क्रोध रहित, धर्म-परायण, सत्यवादी और इन्द्रिय संयम में तत्पर हैं, ऐसे ब्राह्मणों को श्रेष्ठ समझना चाहिए और उन्हीं को दान देने से महान् फल की प्राप्ति होती है। जो अभिमान रहित हैं, जो सबकुछ सह लेते हैं, जिनके विचार दृढ़ हैं, जो जितेन्द्रिय, सब प्राणियों के हित में तत्पर और सबके प्रति मैत्रीभाव रखने वाले हैं, उनको दिया हुआ दान महान् फल देने वाला होता है। जो निर्लोभ, पवित्र, विद्वान, लज्जाशील, सत्य बोलने वाले तथा

अपने कर्तव्य का पालन करने वाले हैं, उनको दिया हुआ दान महान् फलदायक होता है। जो सदाचार परायण हों, जिनकी जीविका का साधन नष्ट हो गया हो, अत: भोजन न मिलने के कारण जो अत्यन्त दुर्बल हो गये हों- ऐसे लोग यदि याचक बनकर दाता के पास आएं, तो उन्हें दिया हुआ दान महान् फलदायक होता है। चारों ओर शत्रुओं के भय से पीड़ित होकर आये हुए जो याचक केवल भोजन चाहते हैं, उन्हें दिया दान महान फलदायक होता है।

स्वर्ग और नरक की प्राप्ति के बारे में वर्णन करते हुए भीष्म पितामह कहते हैं कि जो अध्यापक, सेवक और अपने भक्त- इन तीनों को बिना किसी अपराध के ही त्याग देते हैं, उन्हें भी नरक में ही गिरना पड़ता है। जो बालकों, वृद्धों और सेवकों को दिये बिना ही पहले स्वयं भोजन कर लेते हैं, वे भी नि:संदेह नरक में पड़ते हैं।

दानेन तपसा चैव सत्येन च युधिष्ठिर।
ये धर्ममनुवर्तन्ते ते नराः स्वर्गगामिनः।।

युधिष्ठिर! जो मनुष्य दान, तप और सत्य के द्वारा धर्म का अनुष्ठान करते हैं, वे मनुष्य स्वर्ग में जाते हैं। जिनके प्रयत्न से मनुष्य भय, पाप, बाधा, दरिद्रता और व्याधिजनित पीड़ा से छुटकारा पा जाते हैं, वे लोग स्वर्ग में जाते हैं। जो क्षमाशील, धैर्यशाली, धर्म कार्य के लिए तत्पर रहने वाले और श्रेष्ठ आचार से सम्पन्न हैं, ऐसे मनुष्य स्वर्ग में प्रवेश करते हैं। जो मद्य, माँस, परस्त्री-संसर्ग और मादक द्रव्यों से दूर रहते हैं, वे स्वर्गगामी होते हैं। जो वस्त्र, आभूषण, भोजन, पानी तथा अन्न दान करते हैं और अन्य परिवारों की वृद्धि में सहायक होते हैं, वे स्वर्ग में जाते हैं। जो सब प्रकार की हिंसाओं से दूर रहते हैं, सब-कुछ सहते हैं और सबको आश्रय प्रदान करते हैं, वे मनुष्य स्वर्ग में जाते हैं। जो जितेन्द्रिय होकर माता-पिता की सेवा करते हैं और भाइयों पर स्नेह रखते हैं, वे जन स्वर्ग में निवास करते हैं। जो धनी, बलशाली और नवयौवन से युक्त होने पर भी अपनी इन्द्रियों को वश में रखते हैं, वे धीर पुरुष स्वर्ग में प्रवेश करते हैं। जो अपराधियों के प्रति दयालु, कोमल स्वभाव और मृदु स्वभाव वाले व्यक्तियों पर प्रेम करते हैं और जिन्हें दूसरों की सेवा में सुख मिलता है, वे मनुष्य स्वर्ग में जाते हैं। जो लोग सहस्रों मनुष्यों को भोजन परोसते हैं, सहस्रों को दान देते और सहस्रों की रक्षा करते हैं, वे स्वर्गगामी होते हैं। जो दूसरों के लिए आश्रम, गृह, उद्यान, कूप, बगीचा, धर्मशाला, प्याऊ तथा चहारदीवारी बनवाते हैं, वे लोग स्वर्ग में जाते हैं। हमने सुना है कि जिनके पालन-पोषण का अपने ऊपर भार है, उस समुदाय को कष्ट दिए बिना ही दाता को दान देना चाहिए। जो पोष्य वर्ग को कष्ट देकर या उन्हें भूखा रखकर दान करता है, वह अपने आपको नीचे गिराता है। क्रोध का अभाव, सत्य भाषण, अहिंसा, इन्द्रिय-संयम, सरलता, निर्वैरता, अभिमान-शून्यता, लज्जा, सहनशीलता, दम और मनोनिग्रह- ये गुण जिसमें स्वभावत: दिखाई दें और धर्म विरुद्ध कार्य दृष्टिगोचर न हों- वे ही दान के उत्तम पात्र और सम्मान के अधिकारी हैं।

सेवा और तप की महिमा का वर्णन करते हुए भीष्म पितामह कहते हैं- हे युधिष्ठिर! गुरुजनों की सेवा सारे पापों को नष्ट कर देती है। अभिमान महान यश को नष्ट कर देता है। तप से स्वर्ग मिलता है, तप से सुयश की प्राप्ति होती है। तप से दीर्घायु, उच्च पद और उत्तमोत्तम भोग प्राप्त होते हैं। जो सब पर सन्देह करता है, जो बालकों और मूर्खों जैसा व्यवहार करता है तथा कड़वे वचन बोलता है, विद्वान लोगों ने ऐसे मनुष्यों को कुत्ता माना है। ज्ञान, विज्ञान, आरोग्य, रूप, सम्पत्ति तथा सौभाग्य भी तपस्या से प्राप्त होते हैं। विद्वान होने पर भी जिसकी आजीविका क्षीण हो गई है, जो दीन, दुर्बल और दु:खी है, ऐसे मनुष्य की जो भूख मिटा देता है, उस मनुष्य के समान पुण्यात्मा कोई नहीं है। याचना करने वाले की अपेक्षा याचना न करने वाले को दिया हुआ दान ही श्रेष्ठ एवं कल्याणकारी बताया गया है और अधीर हृदय वाले कृपण मनुष्य की अपेक्षा धैर्य धारण करने वाला ही विशेष सम्मान का पात्र है। याचक मर जाता है, परन्तु दाता कभी नहीं मरता। दाता याचक को और अपने-आपको-दोनों को जीवित रखता है। जैसे माता सदा अपने बच्चे को दूध पिलाकर पालती-पोसती है, उसी प्रकार पृथिवी सब प्रकार के रस देकर भूमिदाता पर अनुग्रह करती है।

मनुष्य के सच्चे साथी के बारे में वर्णन करते हुए पितामह कहते हैं- हे युधिष्ठिर! प्राणी अकेला ही जन्म लेता है, अकेला ही मरता है, अकेला ही दु:ख सागर से पार होता है और अकेला ही दु:ख भोगता है। माता, पिता, भाई, पुत्र, गुरु, सम्बन्धी और मित्रवर्ग इनमें से कोई भी मृतक का सहायक नहीं हो सकता। लोग उसके मृतक शरीर को काठ और मिट्टी के ढेले की भाँति पर फेंककर ही घरों रोते हैं और फिर उसकी ओर से मुँह मोड़कर चल देते हैं। तब एकमात्र धर्म ही उस जीवात्मा का अनुसरण करता है। अत: धर्म ही सच्चा सहायक है। इसलिए मनुष्य को सदा धर्म का ही सेवन करना चाहिए। ■

भगवान श्री राम का लक्ष्मण जी को उपदेश

अध्यात्म रामायण में एक प्रसंग है जिसमें श्री लक्ष्मण जी के पूछने पर भगवान श्री राम उन्हें आत्मा का उपदेश करते हुए कहते हैं कि हे लक्ष्मण! यह जो कुछ राज्य और देह आदि दिखाई देता है, वह सब यदि सत्य होता, तो अवश्य तुम्हारा परिश्रम सफल होता। किन्तु ये भोग तो मेघरूपी वितान में चमकती हुई बिजली के समान चंचल हैं और आयु अग्नि में तपाये हुए लोहे पर पड़ी हुई जल की बूँद के समान क्षणिक है। जिस प्रकार सर्प के मुँह में पड़ा हुआ भी मेढक मच्छरों को ताकता रहता है, उसी प्रकार लोग कालरूप सर्प से ग्रस्त हुए भी अनित्य भोगों को चाहते रहते हैं। कैसा आश्चर्य है कि शरीर के भोगों के लिए ही मनुष्य रात-दिन अति कष्ट सहकर नाना प्रकार की क्रियाएं करता रहता है। यदि यह समझ ले कि शरीर आत्मा से भिन्न है, तो फिर भला पुरुष कैसे किसी भोग को भोग सकता है।

पिता, माता, पुत्र, भाई, स्त्री और बन्धु-बान्धवों का संयोग प्याऊ पर एकत्रित हुए जीवों अथवा नदी प्रवाह से इकट्ठी हुई लकड़ियों के समान चंचल है। यह नि:संदेह दिखाई पड़ता है कि लक्ष्मी छाया के समान चंचल, यौवन जल-तरंग के समान अनित्य है, स्त्री-सुख स्वप्न के समान मिथ्या और आयु अत्यन्त अल्प है तथापि प्राणियों का इनमें कितना अभिमान है। यह संसार सदा रोगादि-संकुल तथा स्वप्न और गन्धर्व नगर के समान मिथ्या है, मूढ़जन ही इसको सत्य मानकर इसका अनुकरण करते हैं। नित्य सूर्य के उदय और अस्त होने से आयु क्षीण हो रही है तथा नित्य ही दूसरों की वृद्धावस्था और मृत्यु होती देखी जाती है, तो भी मूढ़ पुरुष को किसी प्रकार चेत नहीं होता। नित्यप्रति उसी प्रकार दिन और रात होते हैं; किन्तु मूढ़मति पुरुष भोगों के पीछे ही दौड़ता है, काल की गति को नहीं देखता। कच्चे घड़े में भरे हुए जल के समान आयु प्रतिक्षण क्षीण हो रही है और रोग-समूह शत्रुओं के समान शरीर को नष्ट करते हैं। वृद्धावस्था सिंहिनी के समान डराती हुई सामने खड़ी है और यह मृत्यु भी उसके साथ ही चलती हुई अन्त समय की प्रतीक्षा कर रही है। किन्तु देह में अहं-भावना करने वाला जीव इस कृमि, विष्ठा और भस्मरूप शरीर को ही 'मैं लोक-प्रसिद्ध राजा हूँ,' ऐसा मानता है। हे रघुश्रेष्ठ! तुम कुछ सोचकर बताओ कि जिसके आश्रय से तुम संसार को दग्ध करना चाहते हो वह त्वचा, अस्थि, मांस, विष्ठा, मूत्र, शुक्र और रुधिर आदि से बना हुआ विकारी और परिणामी देह आत्मा किस प्रकार हो सकता है?

हे भाई! इस देहाभिमान से युक्त पुरुष में ही सम्पूर्ण दोष प्रकट हुआ करते हैं। 'मैं देह हूँ' इस बुद्धि का नाम ही अविद्या है और 'मैं देह नहीं, चेतन आत्मा हूँ' इसी को आत्म-विद्या कहते हैं। अविद्या जन्म-मरणरूप संसार की कारण है और विद्या उसको निवृत्त करने वाली है, अत: मोक्ष की इच्छा रखने वाले को सदा आत्म-विद्या-उपार्जन का प्रयत्न करना चाहिए। हे शत्रुदमन! काम-क्रोध आदि इस साधन में विघ्न करने वाले शत्रु हैं। उनमें भी मोक्ष में विघ्न उपस्थित करने के लिए तो एकमात्र क्रोध ही पर्याप्त है, जिसका आवेश होने से पुरुष पिता, माता, सुहृद और बन्धुओं का भी वध कर डालता है। मन के सन्ताप का मूल क्रोध ही है और क्रोध ही संसार का बन्धन तथा धर्म का क्षय करने वाला है। इसलिए तुम क्रोध को छोड़ दो। यह क्रोध महान शत्रु है, तृष्णा वैतरणी नदी है, सन्तोष नन्दनवन है और शान्ति ही कामधेनु है। इसलिए तुम शान्ति धारण करो, इससे क्रोधरूपी शत्रु का तुम पर प्रभाव न होगा। आत्मा देह, इन्द्रिय, मन, प्राण और बुद्धि आदि से पृथक तथा शुद्ध, स्वयंप्रकाश, अविकारी और निराकार है। जबतक मनुष्य देह, इन्द्रिय और प्राण आदि से आत्मा की भिन्नता नहीं जानते, तबतक वे मृत्युपाश में बंधकर सांसारिक दु:ख समूह से पीड़ित होते रहते हैं। इसलिए तुम सर्वदा अपने हृदय में बुद्धि आदि से आत्मा को भिन्न अनुभव करो, इस सम्पूर्ण बाह्य व्यवहार का अनुवर्तन करो और सुख अथवा दु:खरूप जैसा प्रारब्ध हो, उसी को भोगते हुए चित्त में खेद न मानो। बाहर से इन्द्रिय आदि द्वारा कर्तृत्व प्रकट करते हुए जो कार्य प्रारब्धवश उपस्थित हो उसे करते रहने से भी तुम बन्धन में नहीं पड़ोगे। भीतर से राग-द्वेष रहित और शुद्ध स्वभाव रहने के कारण तुम कर्मों से लिप्त न होगे। मेरे इस सम्पूर्ण कथन पर तुम सर्वदा अपने हृदय में विचार करो। ऐसा करने से तुम सम्पूर्ण सांसारिक दु:खों से कभी बाधित न होगे। ■

प्रेरक प्रसंग

सच्ची साधना

बात तब की है, जब रामकृष्ण परमहंस कोलकाता के प्रसिद्ध दक्षिणेश्वर मंदिर के मुख्य पुजारी बन चुके थे। देवी काली के प्रति उनकी आस्था और समर्पण की चर्चा हर तरफ होने लगी थी। लोग अपनी समस्याएं लेकर उनके पास आते और संतुष्ट होकर जाते। एक दिन की बात है, काली मां की पूजा करके रामकृष्ण परमहंस प्रसाद ग्रहण कर ही रहे थे कि उनका एक शिष्य मणि उनके पास आया। उसके चेहरे की मलीनता देखकर स्वामी रामकृष्ण ने पूछा, 'क्या बात है मणि? लो प्रसाद खाओ।' इतना कहकर मणि के साथ वह मंदिर की सीढ़ियों पर बैठ गए। मणि अपने घर-गृहस्थी की जिम्मेदारियों से ऊब चुका था। उसने कहा, 'ठाकुर, मैं ईश्वर की आराधना में पूरी तरह लग जाना चाहता हूँ, लेकिन घर-गृहस्थी की जिम्मेदारियों ने बांध रखा है। इसे कोई संभाल ले तो साधना में ध्यान लगा सकूंगा। कोई उपाय बताइए।' स्वामी जी ने कहा, 'मणि, यह अच्छा है कि तुम्हारे मन में ईश्वर के प्रति इतनी भक्ति है। लेकिन पहले अपनी सांसारिक जिम्मेदारियों को पूरा करो और आध्यात्मिक साधना भी करो। जैसे-जैसे तुम अपने प्रमुख कर्तव्यों को पूरा करोगे, तुम्हारा मन भी आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ने लगेगा। परिवार की सेवा भी ईश्वर सेवा का एक रूप है। आध्यात्मिक साधना और सांसारिक जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाना किसी साधना से कम नहीं है।' सांसारिक जिम्मेदारियों से मुँह मोड़कर आध्यात्मिकता प्राप्त करना सच्ची साधना नहीं है। हर कर्तव्य और जिम्मेदारी का निर्वाह भी ईश्वर की भक्ति का एक हिस्सा है। इससे यह सीखने को मिलता है कि किसी भी काम को ईश्वर की सेवा के रूप में देखा जाना चाहिए। यही असली भक्ति और साधना है। ■

मार्च, 2025 के पर्व-त्योहार

 14 मार्च शुक्रवार- होली, पूर्णिमा चन्द्रग्रहण 19 मार्च बुधवार-रंग पंचमी 22 मार्च शनिवार- शीतला अष्टमी, बसोडा 29 मार्च शनिवार- अमावास्या सूर्यग्रहण 30 मार्च रविवार- हिन्दु नववर्ष शुरु, चैत्र नवरात्र, गुड़ी पड़वा 31 मार्च सोमवार- गणगौर पूजा, ईद-उल-फितर

सखी री, मैं तो गिरधर के रंग राती

सखी री, मैं तो गिरधर के रंग राती।। टेक।।

पचरंग मेरा चोला रंगा दे, मैं झुरमुट खेलन जाती।

झुरमुट में मेरा सांई मिलेगा, खोल अडंबर गाती।। 1।।

चंदा जाएगा, सूरज जाएगा, जाएगा धरण अकासी।

पवन पाणी दोनों ही जाएंगे, अटल रहे अबिनासी।। 2।।

सुरत निरत का दिवला संजोले, मनसा की कर बाती।

प्रेम हटी का तेल बना ले, जगा कर दिन राती।। 3।।

जिनके पिय परदेस बसत हैं, लिखि-लिखि भेजें पाती।

मेरे पिय मो माहिं बसत है, कहूं न आती जाती।। 4।।

पीहर बसूं न बसूं सासघर, सतगुरु सब्द संगाती।

ना घर मेरा ना घर तेरा, मीरा हरि रंग राती।। 5।।

भारत के 76 वें गणतंत्र दिवस पर झंडारोहण एवं बाल प्रतियोगिताओं का भव्य आयोजन

''विविधता में एकता ही भारत की शक्ति है''

श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली। भारत की स्वतंत्रता के बाद भी देश में अंग्रेजों के बनाये संविधान के अनुसार ही शासन व्यवस्था संचालित की जा रही थी। तब हमारे मनीषियों और विधिवेत्ताओं ने विचार किया कि हमें अपना संविधान बनाना चाहिए जो हमारी विरासत, संस्कृति, परंपराओं और रीति-रिवाजों के अनुकूल हो। ऐसा विचार कर तत्कालीन भारत संरकार ने पूरे देश से सभी पंथों, संप्रदायों, क्षेत्रों के साथ विभिन्न क्षेत्रों में कुशलता रखने वाले विधि-वेत्ताओं एवं विद्वानों की एक संविधान निर्माण समिति का गठन किया। इस प्रकार इस समिति ने दो वर्ष ग्यारह महीने और 18 दिन तक लगातार विचार-विमर्श करने के बाद भारतीय संविधान का निर्माण किया जिसे 26 जनवरी, 1950 से पूर्णत: लागू किया गया। तभी से हर वर्ष 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ सम्पूर्ण भारत में मनाया जाता है। इस अवसर पर भारत की राजधानी दिल्ली के कर्तव्य पथ पर तीनों सेनाओं के तत्वावधान में एक भव्य और विशाल परेड का आयोजन किया जाता है, जिसकी सलामी राष्ट्रपति लेते हैं। इस सुअवसर पर विदेश के राष्ट्र नायकों को भी मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया जाता है। इसी तरह सभी प्रान्तों की राजधानी में भी राज्य स्तर पर परेड का आयोजन किया जाता है जिसकी सलामी वहाँ के राज्यपाल और मुख्यमंत्री लेते हैं। यह एक ऐसा अवसर है जिसमें भारतीय गणराज्य की तीनों सेनाएं अपनी शक्ति, शौर्य और

भारत के 76वें गणतंत्र दिवस पर श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में सामूहिक रूप से झंडारोहण किया गया।

सामर्थ्य का प्रदर्शन करती हैं।

इसी श्रृंखला में परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी की प्रेरणा से हंसज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर के तत्वावधान में श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में भी प्रतिवर्ष की भाँति भारत के 76वें गणतंत्र दिवस के सुअवसर पर आश्रम परिसर में झंडारोहण के साथ राष्ट्रगान का गायन किया गया। सर्वप्रथम एक झंडा रैली का आयोजन किया गया जो आश्रम के विभिन्न मार्गों से होते हुए गणतंत्र समारोह स्थल पर पहुँची। इस झंडा रैली में देशभक्ति से ओतप्रोत नारों जैसे- 'सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा', 'वंदे मातरम', 'भारत माता की जय', 'इंकलाव जिंदाबाद', 'हिन्दुस्तान जिंदाबाद' आदि नारों को समवेत स्वर में लगाया गया जिससे सम्पूर्ण वातावरण देशभक्ति की ध्वनि से गुंजायमान हो उठा। तत्पश्चात् परिसर में महात्मा ज्ञानप्रभानंद जी और दीक्षाबाई जी ने संयुक्त रूप से झंडारोहण किया। सभी ने मिलकर राष्ट्रगान गाया और बुलंद

भारत के 76वें गणतंत्र दिवस पर श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में एक सामूहिक तिरंगा झंडा रैली का आयोजन किया गया जिसमें भारी संख्या में उत्साहपूर्वक स्त्री-पुरुष एवं बच्चों ने भाग लिया।

भारत के 76वें गणतंत्र दिवस पर श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में आयोजित बाल प्रतियोगिता में सामूहिक रूप से देश भक्ति का गीत प्रस्तुत करती बालिकाएं।

आवाज में नारे लगाये। इस गणतंत्र दिवस समारोह में लगभग 500 स्त्री-पुरुषों और बच्चों ने भाग लिया। सभी नवीन वस्त्रों में सुसज्जित होकर आए थे। सभी के गले में तिरंगा पट्टा, सिर पर तिरंगी टोपी, सीने पर बैज और हाथों में तिरंगा झंडा थामे बहुत ही मोहक लग रहे थे। सभी देशभक्ति के भाव से भरे हुए थे, सभी के अन्दर जोश, उल्लास, उमंग और उत्साह हिलोरें मार रहा था। हम भले ही दिखने में अनेक दिखते हों, किन्तु देश की एकता और अखण्डता का सवाल आते ही सभी एक स्वर में देश रक्षा के लिए तत्पर हो जाते हैं। यह भाव ही भारत में **"विविधता में एकता"** का दर्शन कराता है।

देश, समाज और परिवार के भविष्य बालक-बालिकाओं के भीतर छिपी प्रतिभा को उभारने के लिए हंसज्योति की ओर से इस सुअवसर पर दौड़, गायन और भाषण की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें 10 से 14 वर्ष और 15 से 18 वर्ष के 70 बालकों

काजल
भाषण-प्रथम स्थान

गरिमा
गायन-प्रथम स्थान

खुशी
दौड़-प्रथम स्थान

आनंद
दौड़-प्रथम स्थान

खुशी सनवाल
भाषण-द्वितीय स्थान

मोनिका
गायन-द्वितीय स्थान

आंचल
दौड़-द्वितीय स्थान

रनवीर
दौड़-द्वितीय स्थान

शुभम
भाषण-तृतीय स्थान

कशिश
गायन-तृतीय स्थान

रोशनी
दौड़-तृतीय स्थान

लोकेश
दौड़-तृतीय स्थान

भारत के 76वें गणतंत्र दिवस पर श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में आयोजित दौड़ प्रतियोगिता में दौड़ने के लिए तैयार बालक

और 57 बालिकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सर्वप्रथम 100 मीटर दौड़ का आयोजन किया गया जिसमें 55 बालकों तथा 27 बालिकाओं ने भाग लिया। इस दौड़ प्रतियोगिता में बालकों में श्री आनन्द पुत्र श्री राजू ने प्रथम, श्री रणवीर सिंह पुत्र श्री पुरुषोत्तम सिंह ने द्वितीय तथा श्री लोकेश दुबे पुत्र श्री जोखू दुबे ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। एवं शशिकांत दास को जज के रूप में नियुक्त किया गया। इस प्रतियोगिता का संचालन कुमारी प्रिया वर्मा और कुमारी मनीषा दुबे ने संयुक्त रूप से किया। जजों के द्वारा प्रतियोगियों को दिए गए अंकों के आधार पर भाषण प्रतियोगिता में कुमारी काजल पुत्री श्री विपिन मंडल ने प्रथम, कुमारी खुशी सनवाल पुत्री श्री रमेश सनवाल ने द्वितीय तथा श्री शुभम प्रतियोगी बालक-बालिकाओं को भी हंसज्योति की ओर से प्रोत्साहन स्वरूप प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। इस आयोजन से सभी बालक-बालिकाओं और उनके अभिभावकों में अद्भुत उत्साह देखने को मिला और उनकी मांग थी कि भविष्य में भी राष्ट्रीय पर्वों पर इसीप्रकार बालक-बालिकाओं की प्रतिभा को उभारने के लिए विविध प्रतियोगिताओं

भारत के 76वें गणतंत्र दिवस पर श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में आयोजित बाल प्रतियोगिताओं में शामिल विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

इसी प्रकार बालिकाओं में कुमारी खुशी पुत्री श्री राहुल ने प्रथम, कुमारी आंचल पुत्री श्री बबलू ने द्वितीय तथा कुमारी रोशनी पुत्री श्री रुपकिशोर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

तत्पश्चात भाषण और गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 34 बालक एवं बालिकाओं ने भाग लिया। बालक-बालिकाओं ने देशभक्ति, राष्ट्र की महानता एवं महिला सशक्तिकरण विषय पर भाषण और गीत प्रस्तुत किए जो बहुत ही प्रेरणादायक, अनुकरणीय और व्यावहारिक थे। भाषण एवं गायन प्रतियोगिता के लिए श्री राकेश सिंह, भागेश कुमार त्यागी पुत्र श्री ओमवीर सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी श्रृंखला में गायन प्रतियोगिता में कुमारी गरिमा सनवाल पुत्री श्री रमेश सनवाल ने प्रथम, कुमारी मोनिका दुबे पुत्री श्री जोखू दुबे ने द्वितीय तथा कुमारी कशिश पुत्री श्री सूरज पाल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इन सभी विजेताओं को संस्था की ओर से महात्मा ज्ञानप्रभानंद जी, महात्मा दीक्षाबाई जी एवं श्री राकेश सिंह, संपादक हंसलोक संदेश ने संयुक्त रूप से एक प्रमाणपत्र और स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित और प्रोत्साहित किया तथा इनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं प्रदान कीं। इसके अतिरिक्त सभी का आयोजन किया जाए। संस्था के सभी आयोजक सदस्यों को भी इस आयोजन से अत्यधिक खुशी मिली। इस गणतंत्र समारोह का आयोजन एवं संचालन सुश्री ऋतु राणा, श्री सुरेश वर्मा, विपिन मंडल, प्रदीप पलाई और सत्येन्द्र पंडित ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर संयुक्त रूप से किया। इस प्रकार यह गणतंत्र दिवस समारोह और बाल प्रतियोगिताओं का आयोजन बहुत ही उत्साहजनक और खुशी प्रदान करने वाला रहा। संस्था की ओर से भविष्य में भी राष्ट्रीय पर्व-त्योहारों पर इसप्रकार के शिक्षाप्रद और उल्लासपूर्ण आयोजन आयोजित किए जाते रहेंगे। ■

परमाराध्या माताश्री राजेश्वरी देवी की जयंती 'मातृ शक्ति दिवस' के सुअवसर पर

विशाल जनकल्याण समारोह

आप सभी प्रेमी भक्तों को अत्यन्त हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि परमाराध्या माताश्री राजेश्वरी देवी जी की जयन्ती **"मातृ शक्ति दिवस"** के सुअवसर पर **' विशाल जनकल्याण समारोह'** 5 व 6 अप्रैल, 2025 (शनिवार एवं रविवार) को श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा। इस समारोह के मुख्य अतिथि एवं वक्ता **परमपूज्य श्री भोले जी महाराज** एवं **डॉ. माताश्री मंगला जी** होंगे। इसके अलवा अनेक विद्वानों, बुद्धिजीवियों, समाज सुधारकों तथा महात्मागण के उद्बोधन के साथ प्रसिद्ध संगीतकारों एवं गायकों द्वारा भजन-संगीत तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति की जाएगी। इस सुअवसर पर जिज्ञासुओं को आत्मज्ञान का व्यावहारिक बोध भी कराया जाएगा।

अत: आप अपने क्षेत्र से अधिक से अधिक प्रेमी भक्तों, जिज्ञासुओं एवं श्रद्धालुओं के साथ सपरिवार पधारकर **'जनकल्याण समारोह'** में भाग लेकर आत्म लाभ अवश्य प्राप्त करें।

कार्यक्रम निम्नानुसार है-

5 अप्रैल को सायं 6 से रात्रि 9 बजे तक प्रवचन एवं भजन-संगीत

6 अप्रैल को सायं 6 से रात्रि 9 बजे तक प्रवचन एवं भजन-संगीत

स्थान- श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, भाटी माइंस रोड,
भाटी, छतरपुर, नई दिल्ली-110074

निवेदक- **हंसज्योति (ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर),** नई दिल्ली
संपर्क-8800291788, 8800291288

इस जनकल्याण समारोह का सीधा प्रसारण हंसलोक T.V. पर दोनों दिन सायं 6 से रात्रि 9 बजे तक किया जायेगा।

www.youtube.com/@hanslokTV
https://www.facebook.com/Hanslok

समाचार पत्र हंसलोक संदेश के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित विवरण की घोषणा

(फार्म-4)

1. प्रकाशन स्थल-	श्री हंसलोक आश्रम, खसरा नं-947, भाटी माइंस रोड, भाटी, महरौली, नई दिल्ली-110074
2. प्रकाशन अवधि-	मासिक
3. मुद्रक का नाम	मंगल
क्या भारत का नागरिक है	हां
पता-	E-4, असोला होम्स, असोला, महरौली, नई दिल्ली-110074
4. प्रकाशक का नाम	मंगल
क्या भारत का नागरिक है	हां
पता-	E-4, असोला होम्स, असोला, महरौली, नई दिल्ली-110074
5. संपादक का नाम-	राकेश सिंह
क्या भारत का नागरिक है	हां
पता-	बी-18, भाटी माइंस रोड़, भाटी, महरौली, नई दिल्ली-110074
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	श्री हंसलोक जनकल्याण समिति, खसरा नं-947, भाटी माइंस रोड, भाटी, महरौली, नई दिल्ली-110074

मैं मंगल एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गए विवरण सत्य हैं।

मंगल

01-03-2025 (प्रकाशक के हस्ताक्षर)

श्री हंसलोक सेवक सूचना

सभी श्री हंसलोक सेवक/सेविकाओं तथा जूनियर सेवकों को सूचित किया जाता है कि माताश्री राजेश्वरी देवी जी की जयन्ती **"मातृ शक्ति दिवस"** के सुअवसर पर **'जनकल्याण समारोह' 5 व 6 अप्रैल, 2025** (शनिवार एवं रविवार) को श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर हम सभी को परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के दर्शन, प्रवचन एवं सेवा का सौभाग्य प्राप्त होगा।

इस जनकल्याण समारोह के अवसर पर **श्री हंसलोक सेवक व सेविकाओं का 4 से 7 अप्रैल, 2025 तक "सेवा शिविर" लगाया जा रहा है** जिसमें सभी सेवक/सेविकाएं समारोह की व्यवस्था से संबंधित विभिन्न कार्यों में सेवा-सहयोग करेंगे। इस अवसर पर 4 अप्रैल, 2025 को अपराह्न 2:30 बजे से श्री हंसलोक सेवकों की एक बैठक रखी गयी है जिसमें सभी सेवक/सेविकाओं का भाग लेना आवश्यक है। अत: सभी दस्तानायक अपने सहयोगी सेवक/सेविकाओं के साथ 3 अप्रैल की शाम अथवा 4 अप्रैल की सुबह तक श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली अवश्य पहुँच जायें।

निवेदक

प्रभारी- श्री हंसलोक सेवक संगठन

76 वाँ गणतंत्र दिवस समारोह - 26 जनवरी, 2025
श्री हंसलोक आश्रम, नई दिल्ली,

हंसलोक आश्रम, नई दिल्ली। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 76 वाँ गणतंत्र दिवस धूमधाम से मनाया गया। श्री हंसलोक आश्रम परिसर में सुबह से ही आस-पास के प्रेमीभक्तजन अपने-अपने बच्चों के साथ उपस्थित होकर समवेत स्वर में भारत माता की जय एवं वीर शहीदों के नाम के जयकारे लगा रहे थे। इस अवसर पर विभिन्न प्रकार की बाल प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बाल-बालिकाओं को पुरस्कृत किया गया तथा सभी बाल प्रतिभागियों को भी सहभागिता प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया।

होली की हार्दिक शुभकामनाएं!

होली का त्यौहार बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। ईश्वर भक्त प्रहलाद की याद में इस दिन होली जलाई जाती है। प्रहलाद का अर्थ आनंद होता है। वैर और उत्पीड़न का प्रतीक होलिका जलती है और प्रेम तथा उल्लास का प्रतीक प्रहलाद अक्षुण्ण रहता है। होली मनाने का यही उद्देश्य है कि हम अपनी बुरी आदतों को छोड़ कर प्रभु भक्ति, प्रेम, सेवा और सदव्यवहार को आत्मसात करें। होली पर्व की सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं!

- परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी

माता श्री राजेश्वरी देवी की जयंती के शुभ अवसर पर

मातृ शक्ति दिवस - 5 व 6 अप्रैल, 2025

स्थान : श्री हंसलोक आश्रम, भाटी माइन्स रोड, छत्तरपुर, नई दिल्ली - **110074**